फरवरी 2023

ई-संजीवनी

10 करोड़ परामर्श का आंकड़ा पार

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश — 1

02 प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख — 17

2.1 **मन की बात** — 18
जन भागीदारी की अभिव्यक्ति

2.1.1 **जन भागीदारी से लोकतंत्र को मज़बूती** — 24
जे.पी. नड्डा का लेख

2.1.2 **यूनिटी इन क्रिएटिविटी प्रतियोगिताएँ** — 26

2.2 **उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार** — 30

2.2.1 **भारतीय संस्कृति की प्रतिनिधि हैं कलाएँ** — 34
संध्या पुरेचा का साक्षात्कार

2.2.2 **उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार युवाओं के लिए प्रोत्साहन** — 37
सोनल मानसिंह का साक्षात्कार

2.3 **ई-संजीवनी** — 38
स्वस्थ भारत के लिए एक डिजिटल वरदान

2.3.1 **भारत में निर्बाध डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं को सक्रिय करता यूनिफ़ाइड हेल्थ इंटरफ़ेस** — 42
आर. एस. शर्मा का लेख

2.3.2 **ई-संजीवनी ऐप : स्वास्थ्य सेवाएँ आपके द्वार** — 44
डॉ. रणदीप गुलेरिया का साक्षात्कार

2.4 **यूनिफ़ाइड पेमेंट्स इंटरफ़ेस** — 48
विश्व भर में भुगतान के नए युग का सूत्रपात

2.4.1 **UPI-PayNow के साथ क्रॉस-बॉर्डर वित्तीय समावेशन** — 53
पी. कुमारन का साक्षात्कार

2.4.2 **यूपीआई की वैश्विक सेवाक्षमता की परिकल्पना** — 54
दिलीप अस्बे का लेख

2.5 **बंगाल में कुम्भ की गौरवशाली परम्परा का पुनर्स्थापन त्रिवेणी कुम्भ महोत्सव** — 56

2.5.1 **त्रिवेणी कुम्भ महोत्सव - सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिकता का प्रतीक** — 58
कंचन बैनर्जी का साक्षात्कार

2.6 **स्वच्छ भारत अभियान : जन भागीदारी से सफलता का मार्ग प्रशस्त करता** — 60

03 प्रतिक्रियाएँ — 65

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो! नमस्कार

'मन की बात' के इस 98वें एपिसोड में आप सभी के साथ जुड़कर मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है। सेंचुरी की तरफ बढ़ते इस सफ़र में 'मन की बात' को आप सभी ने जन भागीदारी की अभिव्यक्ति का अद्भुत प्लेटफॉर्म बना दिया है। हर महीने लाखों सन्देशों में कितने ही लोगों के 'मन की बात' मुझ तक पहुँचती है। आप अपने मन की शक्ति तो जानते ही हैं, वैसे ही समाज की शक्ति से कैसे देश की शक्ति बढ़ती है, ये हमने 'मन की बात' के अलग-अलग एपिसोड में देखा है, समझा है और मैंने अनुभव किया है, स्वीकार भी किया है। मुझे वो दिन याद है, जब हमने 'मन की बात' में भारत के पारम्परिक खेलों को प्रोत्साहन की बात की थी। तुरंत उस समय देश में एक लहर सी उठ गई भारतीय खेलों से जुड़ने की, इनमें रमने की, इन्हें सीखने की। 'मन की बात' में जब भारतीय खिलौनों की बात हुई, तो देश के लोगों ने इसे भी हाथो-हाथ बढ़ावा दे दिया। अब तो भारतीय खिलौनों का इतना क्रेज़ हो गया है कि विदेशों में भी इनकी डिमांड बहुत बढ़ रही है। जब 'मन की बात' में हमने स्टोरी-टेलिंग की भारतीय विधाओं पर बात की तो इनकी प्रसिद्धि भी दूर-दूर तक पहुँच गई। लोग, ज़्यादा-से-ज़्यादा भारतीय स्टोरी-टेलिंग की विधाओं की तरफ आकर्षित होने लगे।

साथियो, आपको याद होगा सरदार पटेल की जयंती यानी 'एकता दिवस' के अवसर पर 'मन की बात' में हमने तीन कम्पटीशन्स की बात की थी। ये प्रतियोगिताएँ देशभक्ति पर 'गीत', 'लोरी' और 'रंगोली' इससे जुड़ी थीं। **मुझे यह बताते हुए ख़ुशी है, देशभर के 700 से अधिक ज़िलों के 5 लाख से अधिक लोगों ने बढ़-चढ़ कर इसमें हिस्सा लिया है। बच्चे, बड़े, बुज़ुर्ग, सभी**

ने इसमें, बढ़-चढ़कर भागीदारी की और 20 से अधिक भाषाओं में अपनी एंट्रीज़ भेजी हैं। इन कम्पटीशन में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई है। आपमें से हर कोई अपने आप में एक चैम्पियन है, कला साधक है। आप सभी ने यह दिखाया है कि अपने देश की विविधता और संस्कृति के लिए आपके हृदय में कितना प्रेम है।

साथियो, आज इस मौके पर मुझे लता मंगेशकरजी, लता दीदी की याद आना बहुत स्वाभाविक है, क्योंकि जब ये प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई थी, उस दिन लता दीदी ने ट्वीट करके देशवासियों से आग्रह किया था कि वे इस प्रथा में ज़रूर जुड़ें।

साथियो, लोरी राइटिंग कम्प्टीशन में पहला पुरस्कार, कर्नाटक के चामराजनगर ज़िले के बी.एम. मंजूनाथजी ने जीता है। इन्हें ये पुरस्कार कन्नड़ में लिखी उनकी लोरी 'मलगू कन्दा' के लिए मिला है। इसे लिखने की प्रेरणा इन्हें अपनी माँ और दादी के गाए लोरी-गीतों से मिली। आप इसे सुनेंगे तो आपको भी आनन्द आएगा।

(स्कैन करें और सुनें।)

"सो जाओ, सो जाओ, बेबी,
मेरे समझदार लाडले, सो जाओ,
दिन चला गया है और अँधेरा है,
निद्रा देवी आ जाएगी,
सितारों के बाग से,
सपने काट लाएगी,
सो जाओ, सो जाओ,
जोजो...जो..जो..
जोजो...जो..जो.."

असम में कामरूप ज़िले के रहने वाले दिनेश गोवालाजी ने इस प्रतियोगिता में सेकेंड प्राइज़ जीता है। इन्होंने जो लोरी लिखी है, उसमें स्थानीय मिट्टी और मेटल के बर्तन बनाने वाले कारीगरों के पोपुलर क्राफ्ट की छाप है।

(स्कैन करें और सुनें।)

कुम्हार दादा झोला लेकर आए हैं,
झोले में भला क्या है?
खोलकर देखा कुम्हार के
झोले को तो,
झोले में थी प्यारी-सी कटोरी!
हमारी गुड़िया ने कुम्हार से पूछा,
कैसी है ये छोटी-सी कटोरी!

गीतों और लोरी की तरह ही रंगोली कम्पटीशन भी काफ़ी लोकप्रिय रहा। इसमें हिस्सा लेने वालों ने एक से बढ़कर एक सुन्दर रंगोली बनाकर भेजी। इसमें विनिंग एंट्री, पंजाब के कमल कुमार जी की रही। इन्होंने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और अमर शहीद वीर भगत सिंह की बहुत ही सुन्दर रंगोली बनाई। महाराष्ट्र के सांगली के सचिन नरेन्द्र अवसारीजी ने अपनी रंगोली में जलियाँवाला बाग, उसका नरसंहार और शहीद ऊधम सिंह की बहादुरी को प्रदर्शित किया। गोवा के रहने वाले गुरुदत्त वान्टेकरजी ने गाँधीजी की रंगोली बनाई, जबकि पुदुचेरी के मालातिसेल्वमजी ने भी आज़ादी के कई महान सेनानियों पर अपना फोकस रखा। देशभक्ति गीत प्रतियोगिता की विजेता टी. विजय दुर्गा जी आन्ध्र प्रदेश की हैं। उन्होंने तेलुगु में अपनी एंट्री भेजी थी। वे अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी नरसिम्हा रेड्डी गारुजी से काफ़ी प्रेरित रही हैं। आप भी सुनिए विजय दुर्गाजी की एंट्री का यह हिस्सा।

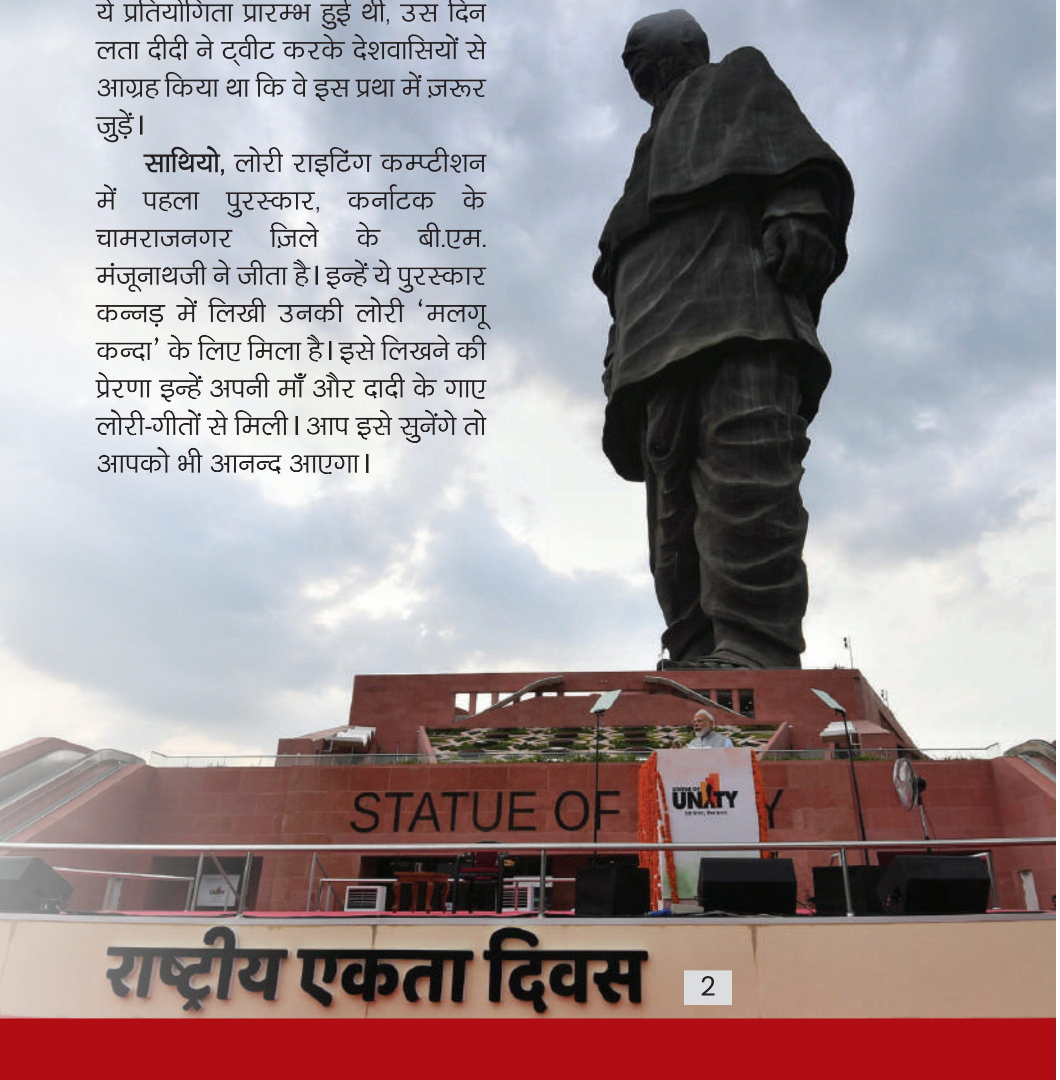

(स्कैन करें और सुनें।)

रेनाडू प्रांत के सूरज,
हे वीर नरसिंह!
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अंकुर हो, अंकुश हो!
अंग्रेजों के न्याय रहित निरंकुश दमन कांड को देख
खून तेरा सुलगा और आग उगला!
रेनाडू प्रांत के सूरज,
हे वीर नरसिंह!

तेलुगु के बाद अब मैं आपको मैथिली में एक क्लिप सुनाता हूँ। इसे दीपक वत्सजी ने भेजा है। उन्होंने भी इस प्रतियोगिता में पुरस्कार जीता है।

(स्कैन करें और सुनें।)

भारत दुनिया की शान है भैया,
अपना देश महान है,
तीन दिशा समुद्र से घिरा,
उत्तर में कैलाश बलवान है,
गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी,
कोशी, कमला बलान है,
अपना देश महान है भैया,
तिरंगे में बसा प्राण है

साथियो, मुझे उम्मीद है आपको यह पसन्द आई होगी। प्रतियोगिता में आई इस तरह की एंट्रीज़ की लिस्ट बहुत लम्बी है। आप संस्कृति मंत्रालय की वेबसाइट पर जाकर इन्हें अपने परिवार के साथ देखें और सुनें, आपको बहुत प्रेरणा मिलेगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, बात बनारस की हो, शहनाई की हो, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ानजी की हो तो, स्वाभाविक है कि मेरा ध्यान उस तरफ़ जाएगा ही। **कुछ दिन पहले 'उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार' दिए गए। ये पुरस्कार म्यूज़िक और परफोर्मिंग आर्ट्स के क्षेत्र में उभर रहे प्रतिभाशाली कलाकारों को दिए जाते हैं। ये कला और संगीत जगत की लोकप्रियता बढ़ाने के साथ ही इसकी समृद्धि में अपना योगदान दे रहे हैं। इनमें वे कलाकार भी शामिल हैं, जिन्होंने उन इंस्ट्रूमेंट्स में नई जान फूँकी है, जिनकी पॉपुलरिटी समय के साथ कम होती जा रही थी।** अब आप सभी इस ट्यून को ध्यान से सुनिए ...

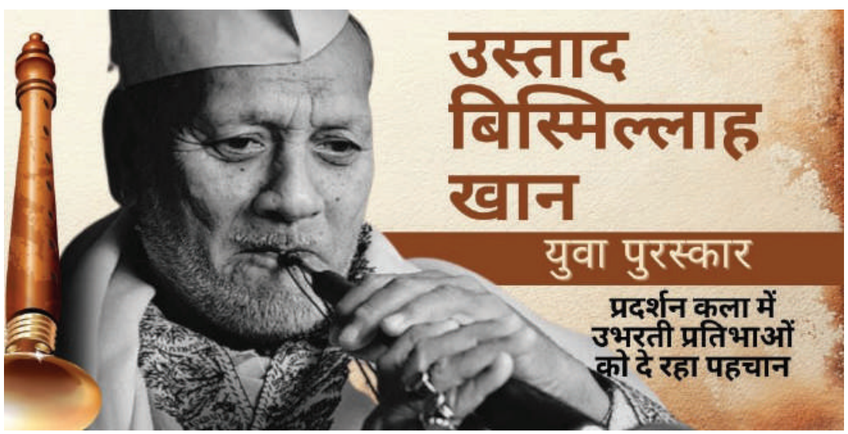

(स्कैन करें और सुनें।)

क्या आप जानते हैं ये कौन-सा इंस्ट्रूमेंट है? सम्भव है आपको पता न भी हो! इस वाद्ययंत्र का नाम 'सुरसिंगार' है और इस धुन को तैयार किया है जॉयदीप मुखर्जी ने। जॉयदीप जी, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान पुरस्कार से सम्मानित युवाओं में शामिल हैं। इस इंस्ट्रूमेंट की धुनों को सुनना पिछले 50 और 60 के दशक से ही दुर्लभ हो चुका था, लेकिन जॉयदीप सुरसिंगार को फिर से पॉपुलर बनाने में जी-जान से जुटे हैं। उसी प्रकार बहन उप्पलपू नागमणिजी का प्रयास भी बहुत ही प्रेरक है, जिन्हें मैन्डोलिन में कर्नाटक इंस्ट्रूमेंटल के लिए यह पुरस्कार दिया गया है, वहीं संग्राम सिंह सुहास भंडारे जी को वारकरी कीर्तन के लिए यह पुरस्कार मिला है। इस लिस्ट में सिर्फ संगीत से जुड़े कलाकार ही नहीं हैं – वी दुर्गा देवीजी ने नृत्य की एक प्राचीन शैली, 'करकट्टम' के लिए यह पुरस्कार जीता है। इस पुरस्कार के एक और विजेता राज कुमार नायकजी ने तेलंगाना के 31 ज़िलों में 101 दिन तक चलने वाली पेरिनी ओडिसी का आयोजन किया था। आज लोग इन्हें पेरिनी राजकुमार के नाम से जानने लगे हैं। पेरिनी नाट्यम, भगवान शिव को समर्पित एक नृत्य है, जो काकतीय डायनेस्टी के दौर में काफी

लोकप्रिय था। इस डायनेस्टी की जड़ें आज के तेलंगाना से जुड़ी हैं। एक अन्य पुरस्कार विजेता साइखौम सुरचंद्रा सिंहजी हैं। ये मैतेई पुंग इंस्ट्रूमेंट बनाने में अपनी महारत के लिए जाने जाते हैं। इस इंस्ट्रूमेंट का मणिपुर से नाता है। पूरन सिंह एक दिव्यांग कलाकार हैं, जो, राजूला-मलुशाही, न्यौली, हुड़का बोल, जागर जैसी विभिन्न म्यूज़िक फोर्म्स को लोकप्रिय बना रहे हैं। इन्होंने इनसे जुड़ी कई ऑडियो रिकॉर्डिंग्स भी तैयार की हैं। उत्तराखंड के फोक म्यूज़िक में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर पूरन सिंहजी ने कई पुरस्कार भी जीते हैं। समय की सीमा के चलते मैं यहाँ सभी अवाड्र्स की बातें भले न कर पाऊँ, लेकिन मुझे विश्वास है कि आप उनके बारे में ज़रूर पढ़ेंगे। **मुझे उम्मीद है कि ये सभी कलाकार, परफोर्मिंग आट्र्स को और पॉपुलर बनाने के लिए ग्रासरूट्स पर सभी को प्रेरित करते रहेंगे।**

मेरे प्यारे देशवासियो, तेजी से आगे बढ़ते हमारे देश में डिजिटल इंडिया की ताकत कोने-कोने में दिख रही है। डिजिटल इंडिया की शक्ति को घर-घर पहुँचाने में अलग-अलग ऐप्स की बड़ी भूमिका होती है। ऐसा ही एक ऐप है, ई-संजीवनी। इस ऐप से टेली-कंसल्टेशन यानी दूर बैठे, वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से, डॉक्टर से अपनी बीमारी के बारे में सलाह कर सकते हैं। **इस ऐप का उपयोग करके अब तक टेली-कंसल्टेशन करने वालों की संख्या 10 करोड़ के आँकड़े को पार कर गई है। आप कल्पना कर सकते हैं, वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से 10 करोड़ कंसल्टेशंस! मरीज़ और डॉक्टर के साथ अद्भुत नाता – ये बहुत बड़ी अचीवमेंट है। इस उपलब्धि के लिए मैं सभी डॉक्टरों और इस सुविधा का लाभ उठाने वाले मरीज़ों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। भारत के लोगों ने तकनीक को कैसे अपने जीवन का हिस्सा बनाया है, ये इसका जीता-जागता उदाहरण है।** हमने देखा है कि कोरोना के काल में ई-संजीवनी ऐप इसके ज़रिए टेली-कंसल्टेशन लोगों के लिए एक बड़ा वरदान साबित हुआ है। मेरा भी मन हुआ कि क्यों ना इसके बारे में 'मन की बात' में हम एक डॉक्टर और एक मरीज़ से बात करें, संवाद करें और आप तक बात को पहुँचाएँ। हम ये जानने की कोशिश करें कि टेली-कंसल्टेशन लोगों के लिए आखिर कितना प्रभावी रहा है। हमारे साथ सिक्किम से डॉक्टर मदन मणिजी हैं। डॉक्टर मदन मणिजी रहने वाले सिक्किम के ही हैं, लेकिन उन्होंने

एमबीबीएस धनबाद से किया और फिर बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से एमडी किया। वो ग्रामीण इलाकों के सैकड़ों लोगों को टेली-कंसल्टेशन दे चुके हैं।

प्रधानमंत्री जी : नमस्कार मदन मणिजी।

डॉ. मदन मणि : जी नमस्कार सर।

प्रधानमंत्री जी : मैं नरेन्द्र मोदी बोल रहा हूँ।

डॉ. मदन मणि : जी... जी सर।

प्रधानमंत्री जी : आप तो बनारस में पढ़े हैं।

डॉ. मदन मणि : जी मैं बनारस में पढ़ा हूँ सर।

प्रधानमंत्री जी : आपका मेडिकल एजुकेशन वहीं हुआ।

डॉ. मदन मणि : जी... जी।

प्रधानमंत्री जी : तो जब आप बनारस में थे, तब का बनारस और आज बदला हुआ बनारस कभी देखने गए कि नहीं गए।

डॉ. मदन मणि : जी प्रधानमंत्री जी, मैं जा नहीं पाया हूँ, जबसे मैं वापस सिक्किम आया हूँ, लेकिन मैंने सुना है कि काफी बदल गया है।

प्रधानमंत्री जी : तो कितने साल हो गए आपको बनारस छोड़े ?

डॉ. मदन मणि : बनारस 2006 से छोड़ा हुआ हूँ सर।

प्रधानमंत्री जी : ओह... फिर तो आपको ज़रूर जाना चाहिए।

डॉ. मदन मणि : जी... जी।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा, मैंने फ़ोन तो इसलिए किया कि आप सिक्किम के अंदर दूर-सुदूर पहाड़ों में रहकर के वहाँ के लोगों को टेली-कंसल्टेशन का बहुत बड़ी सेवाएँ दे रहे हैं।

डॉ. मदन मणि : जी।

प्रधानमंत्री जी : मैं 'मन की बात' के श्रोताओं को आपका अनुभव सुनाना चाहता हूँ।

डॉ. मदन मणि : जी।

प्रधानमंत्री जी : जरा मुझे बताइए, कैसा अनुभव रहा?

डॉ. मदन मणि : अनुभव बहुत बढ़िया रहा प्रधानमंत्री जी। क्या है कि सिक्किम में बहुत नज़दीक का जो PHC है, वहाँ जाने के लिए भी लोगों को

गाड़ी में चढ़ के कम-से-कम एक-दो सौ रुपया ले के जाना पड़ता है और डॉक्टर मिले, नहीं मिले, ये भी एक प्रॉब्लम है, तो टेली-कंसल्टेशन के माध्यम से लोग हम लोग से सीधे जुड़ जाते हैं, दूर-दराज़ के लोग। हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के जो CHOs होते हैं, वो लोग हम लोग से कनेक्ट करवा देते हैं और हम लोग को जो पुरानी उनकी बीमारी है, उनकी रिपोर्ट्स, उनका अभी का प्रेजेंट कंडीशन सारी चीज़ें वो हम लोग को बता देते हैं।

प्रधानमंत्री जी : यानी डॉक्यूमेंट ट्रांसफर करते हैं।

डॉ. मदन मणि : जी.. जी। डॉक्यूमेंट ट्रांसफर भी करते हैं और अगर ट्रांसफर नहीं कर सके तो वो पढ़ के हम लोगों को बताते हैं।

प्रधानमंत्री जी : वहाँ का वेलनेस सेंटर का डॉक्टर बताता है।

डॉ. मदन मणि : जी, वेलनेस सेंटर में जो CHO रहता है, कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर।

प्रधानमंत्री जी : और जो पेशेंट है, वो अपनी कठिनाइयाँ आपको सीधी बताता है।

डॉ. मदन मणि : जी, पेशेंट भी कठिनाइयाँ हम को बताता है। फिर पुराने रिकाइर्स देख के फिर अगर कोई नई चीज़ें हम लोगों को जानना है, जैसे किसी का चेस्ट ऑस्क्यूलेट करना है, अगर उनको पैर सूजा है कि नहीं? अगर CHO ने नहीं देखा है तो हम लोग उसको बोलते हैं कि जा के देखो सूजन है, नहीं है, आँख देखो, अनीमिया है कि नहीं है, उसका अगर खाँसी है तो चेस्ट को ऑस्कुलेट करो और पता करो कि वहाँ पे साउंड्स है कि नहीं।

प्रधानमंत्री जी : आप वीडियो कॉल से बात करते हैं या वीडियो कॉल का भी उपयोग करते हैं ?

डॉ. मदन मणि : जी, वीडियो कॉल का उपयोग करते हैं।

प्रधानमंत्री जी : तो आप पेशेंट को भी आप भी देखते हैं।

डॉ. मदन मणि : पेशेंट को भी देख पाते हैं जी।

प्रधानमंत्री जी : पेशेंट को क्या फीलिंग आता है ?

डॉ. मदन मणि : पेशेंट को अच्छा लगता है, क्योंकि डॉक्टर को नज़दीक से वो देख पाता है। उसको कॉन्फ्युज़न रहता है कि उसका दवा घटाना है, बढ़ाना है, क्योंकि सिक्किम में ज़्यादातर जो पेशेंट होते हैं, वो डायबिटीज, हाइपरटेंशन के आते हैं और एक डायबिटीज और हाइपरटेंशन की दवा को चेंज करने के लिए उसको डॉक्टर मिलने के लिए कितना दूर जाना पड़ता है, लेकिन टेली-कंसल्टेशन के थ्रू वहीं मिल जाता है और दवा भी हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर में फ्री ड्रग्स इनिशिएटिव के थ्रू मिल जाता है, तो वहीं से दवा भी लेके जाता है वो।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा मदन मणिजी, आप तो जानते ही हैं कि पेशेंट का एक स्वभाव रहता है कि जब तक वो डॉक्टर आता नहीं है, डॉक्टर देखता नहीं है, उसको संतोष नहीं होता है और डॉक्टर को भी लगता है ज़रा मरीज़ को देखना पड़ेगा, अब वहाँ सारा ही टेलिकॉम में कंसल्टेशन होता है तो डॉक्टर को क्या फील होता है, पेशेंट को क्या फील होता है ?

डॉ. मदन मणि : जी, वो हम लोग को भी लगता है कि अगर पेशेंट को लगता है कि डॉक्टर को देखना चाहिए, तो हम लोग को, जो-जो चीज़ें देखना है, वो हम लोग, CHO को बोल के, वीडियो में ही हम लोग देखने के लिए बोलते हैं और कभी-कभी तो पेशेंट को वीडियो में ही नज़दीक में आ के उसकी जो परेशानियाँ हैं अगर किसी को चर्म का प्रॉब्लम है, स्किन का प्रॉब्लम है तो वो हम लोग को वीडियो से ही दिखा देते हैं, तो संतुष्टि रहता है उन लोगों को।

प्रधानमंत्री जी : और बाद में उसका उपचार करने के बाद उसको संतोष मिलता है, क्या अनुभव आता है? पेशेंट ठीक हो रहे हैं?

डॉ. मदन मणि : जी, बहुत संतोष मिलता है। हमको भी संतोष मिलता है सर, क्योंकि मैं अभी स्वास्थ्य विभाग में हूँ और साथ-साथ मैं टेली-कंसल्टेशन भी करता हूँ तो फाइल के साथ-साथ पेशेंट को भी देखना मेरे लिए बहुत अच्छा, सुखद अनुभव रहता है।

प्रधानमंत्री जी : एवरेज, कितने पेशेंट आपको टेली-कंसल्टेशन केस आते होंगे?

डॉ. मदन मणि : अभी तक मैंने 536 पेशेंट देखे हैं।

प्रधानमंत्री जी : ओह... यानी आपको काफी इसमें महारत आ गई है।

डॉ. मदन मणि : जी, अच्छा लगता है देखने में।

प्रधानमंत्री जी : चलिए, मैं आपको शुभकामनाएँ देता हूँ। इस टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए आप सिक्किम के दूर-सुदूर जंगलों में, पहाड़ों में रहने वाले लोगों की इतनी बड़ी सेवा कर रहे हैं और ख़ुशी की बात है कि हमारे देश के दूर-दराज़ क्षेत्र में भी टेक्नोलॉजी का इतना बढ़िया उपयोग हो रहा है। चलिए, मेरी तरफ़ से आपको बहुत-बहुत बधाई।

डॉ. मदन मणि : थैंक यू!

साथियो, डॉक्टर मदन मणिजी की बातों से साफ़ है कि ई-संजीवनी ऐप, किस तरह उनकी मदद कर रहा है। डॉक्टर मदनजी के बाद अब हम एक और मदनजी से जुड़ते हैं। ये उत्तर प्रदेश के चंदौली ज़िले के रहने वाले मदन मोहन लालजी हैं। अब ये भी संयोग है कि चंदौली भी बनारस से सटा हुआ है। आइए मदन मोहनजी से जानते हैं कि ई-संजीवनी को लेकर एक मरीज़ के रूप में उनका अनुभव क्या रहा है ?

प्रधानमंत्री जी : मदन मोहनजी, प्रणाम!

मदन मोहनजी : नमस्कार, नमस्कार साहब।

प्रधानमंत्री जी : नमस्कार! अच्छा, मुझे बताया गया है कि आप डायबिटीज के मरीज़ हैं।

मदन मोहनजी : जी।

प्रधानमंत्री जी : और आप टेक्नोलॉजी का उपयोग करके टेली-कंसल्टेशन कर-कर के अपनी बीमारी के सम्बन्ध में मदद लेते हैं।

मदन मोहनजी : जी।

प्रधानमंत्री जी : एक पेशेंट के नाते, एक दर्दी के रूप में मैं आपके अनुभव सुनना चाहता हूँ, ताकि मैं देशवासियों तक इस बात को पहुँचाना चाहूँ कि आज की टेक्नोलॉजी से हमारे गाँव में रहने वाले लोग भी किस प्रकार से इसका उपयोग भी कर सकते हैं। ज़रा बताइए कैसे करते हैं ?

मदन मोहनजी : ऐसा है सर जी, हॉस्पिटलें दूर हैं और जब डायबिटीज हमको हुआ तो हम को जो है, 5-6 किलोमीटर दूर जा कर के इलाज करवाना पड़ता था, दिखाना पड़ता था? और जब से व्यवस्था आप द्वारा बनाई गई है, इसे है कि हम अब जाता हूँ, हमारा जाँच होता है, हमको बाहर के डॉक्टरों से बात भी करा देती हैं और दवा भी दे देती हैं। इससे हमको बड़ा लाभ है और, और लोगों को भी लाभ है इससे।

प्रधानमंत्री जी : तो एक ही डॉक्टर हर बार आपको देखते हैं कि डॉक्टर बदलते जाते हैं ?

मदन मोहनजी : जैसे उनको नहीं समझ, डॉक्टर को दिखा देती हैं। वो ही बात करके दूसरे डॉक्टर से हमसे बात कराती हैं।

प्रधानमंत्री जी : और डॉक्टर आपको जो गाइडेंस देते हैं, वो आपको पूरा फायदा होता है उससे।

मदन मोहनजी : हमको फायदा होता है। हमको उससे बहुत बड़ा फायदा है और गाँव के लोगों को भी फायदा उससे है। सभी लोग वहाँ पूछते हैं कि भइया हमारा बीपी है, हमारा शुगर है, टेस्ट करो, जाँच करो, दवा बताओ और पहले तो 5-6 किलोमीटर दूर जाते थे, लम्बी लाइन लगी रहती थी, पैथोलॉजी में लाइन लगी रहती थी। एक-एक दिन का समय नुकसान होता था।

प्रधानमंत्री जी : मतलब, आपका समय भी बच जाता है।

मदन मोहनजी : और पैसा भी व्यय होता था और यहाँ पर नि:शुल्क सेवाएँ सब हो रही हैं।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा, जब आप अपने सामने डॉक्टर को मिलते हैं तो एक विश्वास बनता है। चलो भई, डॉक्टर है, उन्होंने मेरी नाड़ी देख ली है, मेरी आँखें देख ली हैं, मेरा जीभ को भी चैक कर लिया है, तो एक अलग फीलिंग आता है। अब ये टेली-कंसल्टेशन करते हैं तो वैसा ही संतोष होता है आपको ?

मदन मोहनजी : हाँ, संतोष होता है कि वो हमारी नाड़ी पकड़ रहे हैं, आला लगा रहे हैं, ऐसा मुझे महसूस होता है और हमको बड़ा तबीयत खुश होती है कि भई इतनी अच्छी व्यवस्था आप द्वारा बनाई गई है कि जिससे कि हमको यहाँ परेशानी से जाना पड़ता था, गाड़ी का भाड़ा देना पड़ता था, वहाँ लाइन लगाना पड़ता था और सारी सुविधाएँ हमको घर बैठे-बैठे मिल रही हैं।

प्रधानमंत्री जी : चलिए, मदन मोहनजी मेरी तरफ़ से आपको बहुत शुभकामनाएँ हैं। उम्र के इस पड़ाव पर भी आप टेक्नोलॉजी को सीखे हैं, टेक्नोलॉजी का उपयोग करते है औरों को भी बताइए ताकि लोगों का समय भी बच जाए, धन भी बच जाए और उनको जो भी मार्गदर्शन मिलता है, उससे दवाइयाँ भी अच्छे ढंग से हो सकती हैं।

मदन मोहनजी : हाँ, और क्या।

प्रधानमंत्री जी : चलिए, मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं आपको मदन मोहनजी।

मदन मोहनजी : बनारस को साहब आपने काशी विश्वनाथ स्टेशन बना दिया, डेवलपमेंट कर दिया। ये आपको बधाई है हमारी तरफ़ से।

प्रधानमंत्री जी : मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। हमने क्या बनाया जी, बनारस के लोगों ने बनारस को बनाया है। नहीं तो, हम तो माँ गंगा की सेवा के लिए, माँ गंगा ने बुलाया है, बस, और कुछ नहीं। ठीक है जी, बहुत-बहुत शुभकामनाएँ आपको। प्रणाम जी।

मदन मोहनजी : नमस्कार सर!

प्रधानमंत्री जी : नमस्कार जी!

साथियो, देश के सामान्य मानव के लिए, मध्यम वर्ग के लिए, पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वालों के लिए, ई-संजीवनी, जीवन रक्षा करने वाला ऐप बन रहा है। ये है भारत की डिजिटल क्रान्ति की शक्ति और इसका प्रभाव आज हम हर क्षेत्र में देख रहे हैं। भारत के UPI की ताकत

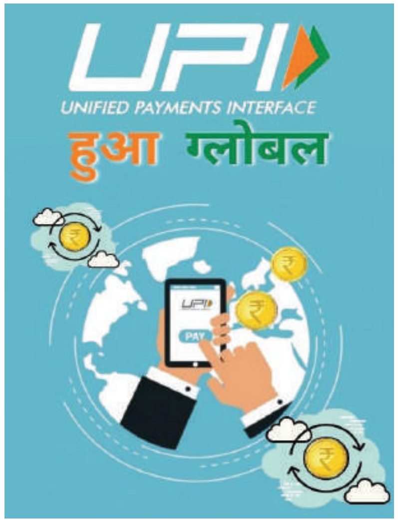

भी हम जानते ही हैं। दुनिया के कितने ही देश, इसकी तरफ आकर्षित हैं। **कुछ दिन पहले ही भारत और सिंगापुर के बीच UPI- पे नाउ लिंक लॉन्च किया गया। अब सिंगापुर और भारत के लोग अपने मोबाइल फ़ोन से उसी तरह पैसे ट्रांसफर कर रहे हैं, जैसे वे अपने-अपने देश के अंदर करते हैं। मुझे ख़ुशी है कि लोगों ने इसका लाभ उठाना शुरू कर दिया है। भारत का ई-संजीवनी ऐप**

हो या फिर UPI, ये ईज़ ऑफ़ लिविंग को बढ़ाने में बहुत मददगार साबित हुए हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, जब किसी देश में विलुप्त हो रहे किसी पक्षी की प्रजाति को, किसी जीव-जंतु को बचा लिया जाता है, तो उसकी पूरी दुनिया में चर्चा होती है। हमारे देश में ऐसी अनेकों महान परम्पराएँ भी हैं, जो लुप्त हो चुकी थीं, लोगों के मन-मस्तिष्क से हट चुकी थीं, लेकिन अब इन्हें जन भागीदारी की शक्ति से पुनर्जीवित करने का प्रयास हो रहा है तो इसकी चर्चा के लिए 'मन की बात' से बेहतर मंच और क्या होगा ?

अब जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ, वो जानकर वाकई आपको बहुत प्रसन्नता होगी, विरासत पर गर्व होगा। अमेरिका में रहने वाले श्रीमान कंचन बैनर्जी ने विरासत के संरक्षण से जुड़े ऐसे ही एक अभियान की तरफ मेरा ध्यान आकर्षित किया है। मैं उनका अभिनंदन करता हूँ। **साथियो, पश्चिम बंगाल में हुगली ज़िले के बांसबेरिया में इस महीने 'त्रिवेणी कुम्भो मोहोत्शौव' का आयोजन किया गया। इसमें आठ लाख से ज़्यादा श्रद्धालु शामिल हुए, लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह इतना विशेष क्यों है? विशेष इसलिए, क्योंकि इस प्रथा को 700 साल के बाद पुनर्जीवित किया गया है। यूँ तो ये परम्परा हज़ारों वर्ष पुरानी है, लेकिन दुर्भाग्य से 700 साल पहले बंगाल के त्रिवेणी में होने वाला ये महोत्सव बंद हो गया था। इसे आज़ादी के बाद शुरू किया जाना चाहिए था, लेकिन वो भी नहीं हो पाया। दो वर्ष पहले, स्थानीय लोग और 'त्रिवेणी कुम्भो पोरिचालोना शॉमिति' के माध्यम से ये महोत्सव फिर शुरू हुआ है। मैं इसके आयोजन से जुड़े सभी लोगों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आप सिर्फ एक परम्परा को ही जीवित नहीं कर रहे हैं, बल्कि आप भारत की सांस्कृतिक विरासत की भी रक्षा भी कर रहे हैं।**

साथियो, पश्चिम बंगाल में त्रिवेणी को सदियों से एक पवित्र स्थल के रूप में जाना जाता है। इसका उल्लेख विभिन्न मंगलकाव्य, वैष्णव साहित्य, शाक्त साहित्य और अन्य बंगाली साहित्यिक कृतियों में भी मिलता है। विभिन्न

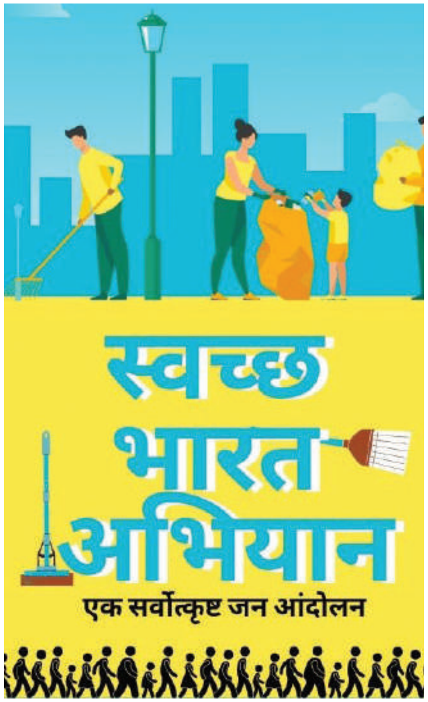

ऐतिहासिक दस्तावेजों से यह पता चलता है कि कभी ये क्षेत्र, संस्कृत, शिक्षा और भारतीय संस्कृति का केंद्र था। कई संत इसे माघ संक्रांति में कुम्भ स्नान के लिए पवित्र स्थान मानते हैं। त्रिवेणी में आपको कई गंगा घाट, शिव मंदिर और टेराकोटा वास्तुकला से सजी प्राचीन इमारतें देखने को मिल जाएँगी। त्रिवेणी की विरासत को पुनर्स्थापित करने और कुम्भ परम्परा के गौरव को पुनर्जीवित करने के लिए यहाँ पिछले साल कुम्भ मेले का आयोजन किया गया था। सात सदियों बाद, तीन दिन के कुम्भ महास्नान और मेले ने इस क्षेत्र में एक नई ऊर्जा का संचार किया है। तीन दिनों तक हर रोज होने वाली गंगा आरती, रुद्राभिषेक और यज्ञ में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। इस बार हुए महोत्सव में विभिन्न आश्रम, मठ और अखाड़े भी शामिल थे। बंगाली परम्पराओं से जुड़ी विभिन्न विधाएँ जैसे कीर्तन, बाउल, गोड़ियों नृत्तों, श्री-खोल, पोटेर गान, छऊ-नाच, शाम के कार्यक्रमों में आकर्षण का केंद्र बने थे। **हमारे युवाओं को देश के सुनहरे अतीत से जोड़ने का यह एक बहुत ही सराहनीय प्रयास है। भारत में ऐसी कई और प्रेक्टिस हैं, जिन्हें रिवाइव करने की ज़रूरत है। मुझे आशा है कि इनके बारे में होने वाली चर्चा लोगों को इस दिशा में ज़रूर प्रेरित करेगी।**

मेरे प्यारे देशवासियो, स्वच्छ भारत अभियान ने हमारे देश में जन भागीदारी के मायने ही बदल दिए हैं। देश में कहीं पर भी कुछ स्वच्छता से जुड़ा हुआ होता है, तो लोग इसकी जानकारी मुझ तक ज़रूर पहुँचाते हैं। ऐसे ही मेरा ध्यान गया है, हरियाणा के युवाओं के एक स्वच्छता अभियान पर। हरियाणा में एक गाँव है– दुल्हेड़ी। यहाँ के युवाओं ने तय किया हमें भिवानी शहर को स्वच्छता के मामले में एक मिसाल बनाना है। उन्होंने युवा स्वच्छता एवं जन सेवा समिति नाम से एक संगठन बनाया। इस समिति से जुड़े युवा सुबह 4 बजे भिवानी पहुँच जाते हैं। शहर के अलग-अलग स्थलों पर ये मिलकर सफाई अभियान चलाते हैं। ये लोग अब तक शहर के अलग-अलग इलाकों से कई टन कूड़ा साफ़ कर चुके हैं।

साथियो, स्वच्छ भारत अभियान का एक महत्त्वपूर्ण आयाम 'वेस्ट टू वेल्थ' भी है। ओडिशा के केंद्रपाड़ा ज़िले की एक बहन कमला मोहराना एक स्वयं सहायता समूह चलाती हैं। इस

समूह की महिलाएँ दूध की थैली और दूसरी प्लास्टिक पैकिंग से टोकरी और मोबाइल स्टैंड जैसी कई चीजें बनाती हैं। ये इनके लिए स्वच्छता के साथ ही आमदनी का भी एक अच्छा ज़रिया बन रहा है। **हम अगर ठान लें तो स्वच्छ भारत में अपना बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं, कम-से-कम प्लास्टिक के बैग की जगह कपड़े के बैग का संकल्प तो हम सबको ही लेना चाहिए। आप देखेंगे, आपका ये संकल्प आपको कितना सन्तोष देगा और दूसरे लोगों को ज़रूर प्रेरित करेगा।**

मेरे प्यारे देशवासियो, आज हमने और आपने साथ जुड़कर एक बार फिर कई प्रेरणादायी विषयों पर बात की। परिवार के साथ बैठकर के उसे सुना और अब उसे दिनभर गुनगुनाएँगे भी। हम देश की कर्मठता की जितनी चर्चा करते हैं, उतनी ही हमें ऊर्जा मिलती है। इसी ऊर्जा प्रवाह के साथ चलते-चलते आज हम 'मन की बात' के 98वें एपिसोड के मुकाम तक पहुँच गए हैं। **आज से कुछ दिन बाद ही होली का त्योहार है। आप सभी को होली की शुभकामनाएँ। हमें, हमारे त्योहार वोकल फ़ॉर लोकल के संकल्प के साथ ही मनाने हैं। अपने अनुभव भी मेरे साथ शेयर करना न भूलिएगा। तब तक के लिए मुझे विदा दीजिए। अगली बार हम फिर नए विषयों के साथ मिलेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।**

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

मन की बात
जन भागीदारी की अभिव्यक्ति

> “शताब्दी की तरफ बढ़ते इस सफ़र में, ‘मन की बात’ को आप सभी ने जन भागीदारी की अभिव्यक्ति का अद्भुत प्लेटफ़ॉर्म बना दिया है। हर महीने लाखों सन्देशों में, कितने ही लोगों के ‘मन की बात’ मुझ तक पहुँचती है।”
>
> -प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
> (‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

यह ठीक ही कहा गया है कि, “शब्दों की शक्ति से देश को आगे बढ़ाने वाले नेताओं के उदाहरणों का विपुल इतिहास है।” भारत के गतिशील लोकतंत्र के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि देश के एक निर्वाचित नेता ने भारत की नब्ज़ जानने के लिए देश के नागरिकों के साथ सीधा, दोतरफ़ा संवाद स्थापित किया है।

हर महीने प्रसारित ‘मन की बात’ एक अनूठा और अपनी तरह का पहला रेडियो कार्यक्रम है, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारत के नागरिकों को सम्बोधित करते हैं। देश के कोने-कोने में आम लोगों तक पहुँचने के उद्देश्य के साथ 2014 में प्रारम्भ किए गए ‘मन की बात’ का प्रसारण दुनिया के सबसे बड़े रेडियो नेटवर्क और प्रसारण संगठन आकाशवाणी से किया जाता है। यह 262 रेडियो स्टेशनों, दूरदर्शन और विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स के नेटवर्क पर उपलब्ध कराया जाता है और सामाजिक-आर्थिक तथा सांस्कृतिक रूप से विविध आबादी के विशाल स्पेक्ट्रम तक पहुँचता है।

“मन की बात हर भारतीय से जुड़ने और हमारे देश का भविष्य बेहतर बनाने का आंदोलन है।” प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ये शब्द सही मायने में ‘मन की बात’ का सार समेटे हुए हैं।

> “‘मन की बात’ को व्यापक रूप से सामाजिक क्रान्ति करार दिया गया है और इसका ठोस आधार जन भागीदारी में पाया जाता है। प्रत्येक एपिसोड व्यक्तियों की परिवर्तनकारी शक्ति में प्रधानमंत्री के अटूट विश्वास के मासिक अनुस्मारक का एक क्यूरेशन है।”
>
> -जे.पी. नड्डा
> राज्यसभा सांसद

‘मन की बात’ अपनी शुरुआत से ही राष्ट्र निर्माण के लिए जन भागीदारी की भावना को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम रहा है और भारत के लोगों के लिए अपनी राय देने तथा विकास में भाग लेने के लिए एक मंच के रूप में विकसित हुआ है। आठ साल से चल रहे ‘मन की बात’ कार्यक्रम में हर महीने प्रधानमंत्री को ढेर सारे पत्र प्राप्त होते हैं। यह कार्यक्रम 130 करोड़ भारतीयों की सामूहिक शक्ति, संकल्प और आकांक्षाओं का प्रतिबिम्ब है।

इस पहल के माध्यम से प्रधानमंत्री न केवल राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले हर पहलू के बारे में जानकारी देते हैं, शिक्षित, प्रेरित, आग्रह तथा प्रशंसा करते हैं, बल्कि समाज के सभी क्षेत्रों से आए नागरिकों को अपनी राय, चिन्ताओं और सुझावों को व्यक्त करने का भी अवसर देते हैं, जिन्हें वे इस मासिक कार्यक्रम में साझा कर लोगों की आवाज़ को सामने लाते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में ‘मन की बात’ कार्यक्रम समाज में परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में रूपांतरित हुआ है। प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत अभियान, जो आज एक सफल अभियान है, की शुरुआत शाश्वत कहावत “क्लीनलीनेस इज़ नेक्स्ट टू गॉडलीनेस” के साथ करके पूरे देश को प्रेरित किया; ‘हर घर तिरंगा’ अभियान के लिए जन भागीदारी का आग्रह कर इसे नागरिकों से जुड़ा भारत का सबसे बड़ा अभियान बना दिया। ‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ को सरकारी पहल से जन-आंदोलन में बदलने से लेकर लोगों को कोविड-19 टीकाकरण अभियान के लिए प्रेरित करने तक, जिसने इसे 200 करोड़ से अधिक टीकों के साथ दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान बना दिया – ‘मन की बात’ केवल एक रेडियो कार्यक्रम से आगे बढ़कर भारत के समग्र विकास के प्रतिबिम्ब और जन भागीदारी की अभिव्यक्ति के रूप में सफलतापूर्वक विकसित हुआ है।

क्रमिक रूप से प्रसारित होने वाली

कार्यक्रम की कड़ियों में प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए सन्देश कुछ ही हफ्तों में जनांदोलन बन गए हैं। इसे कुछ स्वदेशी उद्योगों की सफलता में देखा जा सकता है, जब प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' के सम्बोधन में उन पर प्रकाश डाला तो इनकी ख़्याति लोगों के प्रयासों से दूर-दूर तक पहुँची। 'खेलो इंडिया' गेम्स में खो-खो और कबड्डी जैसे पारम्परिक खेलों को बढ़ावा देना हो या देश के कोने-कोने में UPI को अपनाना; चाहे भारतीय खिलौना उद्योग को विदेशों में भी इसके लिए भारी माँग पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करना हो या प्राचीन भारतीय ज्ञान को समझने हेतु देश भर से लोगों को आकर्षित करने के लिए पारम्परिक भारतीय कला रूपों और कहानी कहने की शैलियों को उजागर करना हो; खादी और भारतीय शहद जैसे उत्पादों के निर्यात में वृद्धि के साथ 'वोकल फ़ॉर लोकल' के लिए प्रेरक बनने या 'लोकल से ग्लोबल' के प्रति भारतीयों को मुखर बनने का आह्वान; 'मन की बात' ने जनता को भारत में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया है।

'मन की बात' ने भारत में लोकतंत्र के सदियों पुराने मूल्यों को मज़बूत किया है। यह कई भारतीयों की कहानियों को सामने लाया है, जिन्होंने राष्ट्रीय विकास के लिए जन भागीदारी की सच्ची भावना को अपने छोटे-छोटे तरीकों से प्रदर्शित किया है और देश की सफलता में योगदान दिया है। यह अपनी तरह का पहला रेडियो शो है, जिसकी मेज़बानी प्रधानमंत्री करते हैं और यह भारत के लोगों के सपनों के नए भारत के निर्माण की दिशा में उनके विचारों, आकांक्षाओं, आशाओं और योगदान पर चलता है।

जन भागीदारी को मज़बूत करते प्रधानमंत्री के आह्वान

"आप जो भी पोर्टल ऑनलाइन डिज़ाइन करते हैं; आप जो भी सामग्री बनाते हैं, उसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त सभी भाषाओं में बनाने का प्रयास करें। दुनिया में कई ऐसे देश हैं, जहाँ अंग्रेजी न बोली जाती है और न ही समझी जाती है। ऐसे देशों को भी ध्यान में रखते हुए अपनी जानकारी का प्रचार करें। मुझे यकीन है कि जल्द ही, बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पादों के साथ भारत के आयुष स्टार्ट-अप पूरी दुनिया में राज करेंगे।"

"18 मई को अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस पूरे विश्व में मनाया जाएगा। इसे देखते हुए मेरे युवा मित्रों के लिए मेरे पास एक विचार है। आगामी छुट्टियों के दौरान अपने दोस्तों के साथ एक स्थानीय संग्रहालय क्यों न जाएँ? अपने अनुभव #MuseumMemories के साथ साझा करें। ऐसा करने से आप दूसरों के मन में भी संग्रहालयों के प्रति जिज्ञासा जगाएँगे।"

"मैं चाहूँगा कि आप सभी, खासकर युवा, इस अभियान के बारे में जानें और इसकी ज़िम्मेदारी भी उठाएँ। यदि आपके क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा कोई इतिहास है, यदि किसी स्वतंत्रता सेनानी की स्मृति है, तो आप उसे अमृत सरोवर से भी जोड़ सकते हैं। आइए आज़ादी का अमृत महोत्सव में जल संरक्षण और जीवन बचाने का संकल्प लें। हम बूँद-बूँद करके पानी संरक्षित करेंगे और हर एक की जान बचाएँगे।"

"जहाँ कुछ साल पहले तक इंटरनेट की अच्छी सुविधा नहीं थी, वहाँ अब यूपीआई के ज़रिए भुगतान की भी सुविधा है। सागरिका, प्रेक्षा और आनंदिता के अनुभवों को देखते हुए मैं भी आपसे यही आग्रह करूँगा कि आप 'कैशलेस डे आउट' का प्रयोग करके देखें, ज़रूर करें। मैं चाहूँगा कि आप डिजिटल भुगतान की इस शक्ति और स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र से सम्बन्धित अनुभव साझा करें। आपके अनुभव कई अन्य देशवासियों के लिए प्रेरणा बन सकते हैं।"

"आपको अपने आस-पास के क्षेत्र में एक ऐसे ऐतिहासिक स्टेशन पर जाने के लिए भी समय निकालना चाहिए। आपको स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास के उन पन्नों के बारे में विस्तार से जानने को मिलेगा, जिनके बारे में आप नहीं जानते होंगे। मैं स्कूल के छात्रों और शिक्षकों से आग्रह करता हूँ कि वे अपने स्कूल के छोटे बच्चों को स्टेशन ले जाएँ और उन बच्चों को घटनाओं की पूरी श्रृंखला बताएँ। मेरा एक सुझाव यह भी है कि 2 अगस्त से 15 अगस्त तक हम सभी अपनी सोशल मीडिया प्रोफाइल पिक्चर्स में तिरंगा लगा सकते हैं।"

"अगर आप भी किसी दिव्यांग मित्र को जानते हैं, उनकी प्रतिभा को जानते हैं, तो आप डिजिटल तकनीक की मदद से उन्हें दुनिया के सामने ला सकते हैं। दिव्यांग मित्रों को भी ऐसे प्रयासों में शामिल होना चाहिए!"

"आइए हम सब मिलकर भारतीय खिलौनों को पूरी दुनिया में लोकप्रिय बनाएँ। इसके साथ ही मैं माता-पिता से भी आग्रह करना चाहूँगा कि वे अधिक से अधिक भारतीय खिलौने, क्विज़ और खेल खरीदें।"

"युवा मेले में ज़रूर आएँ और तस्वीरें सोशल मीडिया पर भी शेयर करें। इससे अन्य लोगों को हमारे पारम्परिक मेलों के बारे में पता चलेगा। संस्कृति मंत्रालय अगले कुछ दिनों में एक प्रतियोगिता शुरू करने जा रहा है, जहाँ मेलों की बेहतरीन तस्वीरें भेजने वालों को पुरस्कृत भी किया जाएगा, तो मेलों में जाइए, उनकी तस्वीरें शेयर कीजिए, शायद आपको भी इनाम मिले।"

जन भागीदारी से लोकतंत्र को मज़बूती

जे.पी. नड्डा
राज्य सभा सांसद

जन भागीदारी किसी भी सम्पन्न लोकतंत्र की आधारशिला है। केवल वही लोकतंत्र सफल होता है, जो यह सुनिश्चित करता है कि उसके नागरिकों की आवाज़ सुनी जाती है, उनकी चिन्ताएँ दूर की जाती हैं और उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है। निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में लोगों की सक्रिय भागीदारी, किसी भी समाज की वृद्धि और विकास के लिए आवश्यक है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अनूठी पहल, 'मन की बात' को व्यापक रूप से एक रेडियो क्रान्ति कहा गया है, जिसका आधार जन भागीदारी है। भारत के नागरिकों की सामाजिक समस्याओं से लेकर पर्यावरणीय चुनौतियों तथा तकनीकी प्रगति तक के विभिन्न विषयों पर आधारित 'मन की बात' लोगों से जुड़ने तथा विश्वास और समावेशी शासन का निर्माण करने का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण बन चुका है।

जैसा कि प्रधानमंत्री ने हाल में अपने 'मन की बात' सम्बोधन में उल्लेख किया था, "मन की बात, जन भागीदारी की अभिव्यक्ति के एक अद्भुत मंच के रूप में स्थापित हुआ है, जो लोगों को सरकार के साथ संवाद शुरू करके, देश की वृद्धि और विकास में योगदान के लिए सक्षम करता है।"

पिछले 98 एपिसोड में 'मन की बात' ने भारत में 'जन भागीदारी' और 'जन आंदोलन' की भावना को प्रोत्साहित किया है, फिर चाहे जन भागीदारी की भावना प्रदर्शित करने वाले 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' या 'स्वच्छ भारत' अभियान हों; या अमृत सरोवर या 'वोकल फॉर लोकल' जैसे जन अभियान हों, प्रधानमंत्री के आह्वान पर जन आंदोलनों में तब्दील हुए उनके सन्देशों ने समय-समय पर प्रधानमंत्री की सुधारवादी सोच और एक नए, विकसित तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में नागरिकों की सामूहिक शक्ति को गति दी है।

हर महीने लाखों भारतीय प्रधानमंत्री के साथ सीधे संवाद करते हैं, वे उनके साथ पत्रों, ईमेल और सन्देशों के माध्यम से अपने 'मन की बात' साझा करते हैं। 'मन की बात' कार्यक्रम यह भी दर्शाता है कि समाज की शक्ति कैसे राष्ट्र की शक्ति में बदल सकती है।

हम सभी ने देखा कि भारत के पारम्परिक खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री के आह्वान पर देश भर के युवा हमारे स्वदेशी खेलों को सीखने और खेलने के लिए प्रोत्साहित हुए और इससे देश में खेल क्रान्ति आ गई। इसी तरह, अपने एक 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र से भारतीय खिलौनों को बढ़ावा देने और बच्चों को खिलौना बनाने से जुड़ी भारत की समृद्ध संस्कृति और परम्पराओं के बारे में बताए जाने की अपील की। इसका उद्देश्य केवल पारम्परिक भारतीय खिलौनों को बढ़ावा

देना ही नहीं, बल्कि खिलौनों के आयात, विशेषकर चीन से आयात पर हमारी निर्भरता कम करना भी था। प्रधानमंत्री की अपील ने अद्भुत काम किया, क्योंकि आज भारत के खिलौना आयात में न केवल बहुत कमी आई है, बल्कि इसने हमारे अपने खिलौना उद्योग में जान डाल कर इसे विकसित किया और भारतीय कारीगरों को आजीविका कमाने में मदद मिली है। अपने एक 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने 'कहानी सुनाने' किस्सा की भारत की अनूठी कला की ओर देश का ध्यान आकर्षित किया और आज यह प्रसिद्ध हो चुका है।

प्रधानमंत्री ने लोगों को हमारी जानी-मानी हस्तियों की जयंती से जोड़ने की भी कोशिश की ताकि उन्हें प्रासंगिक और आकर्षक बनाया जा सके। जैसे सरदार पटेल की जयंती, जो 'एकता दिवस' के रूप में मनाई जाती है, उस दिन प्रधानमंत्री ने देश भर के लोगों से जुड़ने के लिए देशभक्ति से सम्बन्धित तीन प्रतियोगिताएँ – गीत लेखन, लोरी और रंगोली शुरू कीं। देशवासियों, विशेष रूप से युवाओं ने उनका यह आह्वान हाथो-हाथ लिया और 700 से अधिक ज़िलों के 5 लाख से अधिक लोगों ने इसमें भाग लिया।

हमने 'हर घर तिरंगा अभियान' की सफलता भी देखी है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में, पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक पूरे देश ने एकजुट होकर इसे एक अनूठा दृश्य बना दिया। ये सब जन भागीदारी के ज्वलन्त उदाहरण हैं, जिसे प्रधानमंत्रीजी ने रेडियो का शक्तिशाली माध्यम उपयोग करके विकसित किया है। 'सबका साथ, सबका विकास' की भावना को मूर्त रूप देते हुए प्रधानमंत्री के 'मन की बात' ने सफलतापूर्वक दो-तरफा संचार माध्यम बनाया है।

भारत में जन भागीदारी एक अदम्य शक्ति है, जिसके ऐसे अकल्पनीय सकारात्मक परिणाम मिले हैं, जो दुनिया के लिए एक उदाहरण हैं। जन भागीदारी की ताक़त का प्रमाण '2 बिलियन से अधिक कोविड-19 टीकाकरण' रिकॉर्ड है, जिसे 18 महीनों में हासिल कर लेना कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी, इसे हमने कर दिखाया। जागरूकता पैदा करने के साथ-साथ भागीदारी और आचरण परिवर्तन को प्रोत्साहित करने के लिए प्रधानमंत्रीजी ने महामारी और कई अन्य के बीच इस ऐतिहासिक उपलब्धि के बारे में 'मन की बात' सम्बोधन में चर्चा की, जो भारत के दूरदराज़ के क्षेत्रों से भी जन भागीदारी में अटूट विश्वास को प्रदर्शित करता है।

'मन की बात' ने न केवल देश में सामाजिक परिवर्तन की लहर शुरू की, बल्कि इससे सशक्त आत्मनिर्भर भारत के विकास की दिशा में लोगों की परिवर्तनकारी शक्ति का भी पता चलता है, जो प्रधानमंत्री के स्पष्ट आह्वान को अमृत काल यानी सब की भागीदारी सब की समृद्धि की ओर ले जाता है।

यूनिटी इन क्रिएटिविटी प्रतियोगिताएँ

भारत की कला, संस्कृति, संगीत
और जनभागीदारी का उत्सव

> *"अमृत महोत्सव कला, संस्कृति, गीत और संगीत के रंगों से सराबोर होना चाहिए"*
>
> -प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

भारत की स्वतंत्रता के गौरवशाली इतिहास के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में संस्कृति मंत्रालय ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को कायम रखते हुए देश भर में तहसील/तालुका स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक तीन अनूठी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

इस पहल की घोषणा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 24 अक्टूबर, 2021 को अपने 'मन की बात' सम्बोधन में की थी और 31 अक्टूबर, 2021 से भारत में राष्ट्रीय एकता दिवस को मज़बूत सार्वजनिक भागीदारी के माध्यम से चिह्नित करने के लिए प्रविष्टियों का अनुरोध किया था। यह विविधता में एकता या #यूनिटीइनक्रिएटिविटी के सार को प्रदर्शित करता है।

3 अनूठी प्रतियोगिताएँ थीं :

- देशभक्ति गीत लेखन
- रंगोली बनाना
- लोरी लेखन

5 लाख से अधिक लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया

देश भर के **700** से अधिक **ज़िलों** से प्रविष्टियाँ आईं

बच्चों, वयस्कों और बुजुर्गों ने **20** से अधिक भाषाओं में प्रविष्टियाँ भेजीं

विजेता और उनकी रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ

प्रधानमंत्री ने रचनात्मक अभिव्यक्ति पर भी प्रकाश डाला और अपने 'मन की बात' सम्बोधन में कुछ विजेता प्रविष्टियों को प्रदर्शित किया, जिसमें प्रत्येक विजेता के दृष्टिकोण और रचनात्मक सोच पर प्रकाश डाला गया। जीतने वाली प्रविष्टि कर्नाटक में चामराजनगर ज़िले के निवासी बी.एम. मंजूनाथ की कन्नड़ में लिखी गई लोरी 'मलगु कांडा' थी, जो उनकी माँ और दादी से प्रेरित है। असम में कामरूप ज़िले के निवासी दिनेश गोवाला द्वारा प्रस्तुत लोरी में स्थानीय स्तर पर मिट्टी और बर्तन बनाने वाले कारीगरों के लोकप्रिय शिल्प का प्रतिबिम्ब था।

इसी तरह, रंगोली प्रतियोगिता के लिए देश के अलग-अलग राज्यों से विभिन्न लोगों ने अलग-अलग थीम्स पर आधारित प्रविष्टियाँ भेजीं, जिनमें हर क्षेत्र की अपनी परम्पराओं, लोककथाओं और प्रथाओं का प्रतिनिधित्व करने का अपना अनूठा तरीका था। पंजाब के कमल कुमार ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और अमर शहीद वीर भगत सिंह की एक बहुत ही सुंदर रंगोली बनाई, जबकि महाराष्ट्र के सांगली के सचिन नरेन्द्र अवसारी ने जलियाँवाला बाग नरसंहार और शहीद ऊधम सिंह की बहादुरी को दर्शाते हुए एक रंगोली बनाई थी।

देशभक्ति गीत लेखन में भी व्यापक भागीदारी और भारत की विभिन्न भाषाओं में प्रेरक प्रविष्टियाँ देखी गईं। अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, नरसिम्हा रेड्डी गारू से अत्यधिक प्रेरित होकर आंध्र प्रदेश की टी. विजय दुर्गा ने तेलुगु में अपनी प्रविष्टि भेजी और प्रथम पुरस्कार जीता।

इन तीन अनूठी प्रतियोगिताओं ने वास्तव में भारत के लोगों को उनकी जड़ों के करीब लाने का प्रयास किया है और भारत की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को चित्रित किया है। यह शानदार प्रतिक्रिया लोगों के अपनी संस्कृति और परम्पराओं के लिए उनके प्यार और गर्व को दर्शाती है और भारत में 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' की शानदार सफलता को चिह्नित करते हुए नागरिकों के देशभक्ति के उत्साह को प्रदर्शित करती है।

#यूनिटीइनक्रिएटिविटी
प्रतियोगिता के विजेताओं के शब्दों में...

"अपने बचपन में मैं वो लोरियाँ सुन कर बड़ा हुआ, जो कई महिलाएँ अपने बच्चों को सुलाने के लिए गातीं हैं। मैं चिकनूर ग्राम के पास के एक गाँव में पला-बढ़ा हूँ। अपनी लोरियों के लिए पहचाना जाना मेरे और मेरे पूरे गाँव के लिए गर्व की बात है। इससे मुझे बहुत प्रेरणा भी मिली है। जब मैंने सुना कि मेरी लोरी आकाशवाणी पर बजेगी, तो मेरा दिल गर्व से भर गया। ये मालगु कांडा नाम की लोरी मेरी माँ और दादी की थी। अमृत महोत्सव जैसे महत्त्वपूर्ण समय पर, 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री द्वारा इस लोरी को सराहना मिली, इसके लिए मैं प्रधानमंत्री और इस देश के लोगों का आभारी हूँ।"

-बी.एम. मंजुनाथ, कर्नाटक (लोरी प्रतियोगिता)

"मुझे यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में मेरी लोरी का उल्लेख किया। राष्ट्रीय स्तर पर इन प्रतियोगिताओं में द्वितीय पुरस्कार जीतना मेरे लिए एक सम्मान की बात थी और मैं दिल्ली आकर इस पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए बहुत उत्साहित था।"

-दिनेश गोवाला, असम (लोरी प्रतियोगिता)

"जब प्रधानमंत्रीजी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में देशभक्ति प्रतियोगिताओं की घोषणा की, तो रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए मेरी बहुत इच्छा हुई। इसमें पूरे भारत के लगभग 700 से अधिक ज़िलों के कलाकारों ने भाग लिया, जिससे इसमें 5,16,000 से अधिक प्रतिभागी थे। 3 स्तरों पर प्रविष्टियों को उचित तरह से आँका गया। पहले जिला स्तर पर, फिर राज्य स्तर पर और फिर राष्ट्रीय स्तर पर। मुझे बहुत खुशी हुई, जब मैंने सुना कि मेरी रंगोली ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार जीता है। रंगोली के लिए दी गई थीम देशभक्ति और एकता थी। मैंने देशभक्ति का विषय चुना और भगत सिंह और सुभाष चन्द्र बोस की रंगोली बनाई। 26 फरवरी को प्रधानमंत्री ने विजेताओं की घोषणा की। मेरे काम और मेरी तस्वीर को इतने बड़े मंच पर प्रदर्शित होते देखकर मेरा दिल गर्व से भर गया। मेरा मानना है कि भारत की समृद्ध संस्कृति और इतिहास के बारे में पीढ़ियों को पढ़ाने और हर राज्य की विभिन्न संस्कृतियों को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा की गई यह एक अद्भुत पहल थी।"

-कमल कुमार, पंजाब (रंगोली प्रतियोगिता)

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के तहत संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीतकर मैं बहुत खुश हूँ। यह मेरे लिए सम्मान की बात है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को मेरी रंगोली पसंद आई और उन्होंने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में मेरे और मेरी रंगोली के बारे में उल्लेख किया। उनके इस कार्यक्रम में अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाले कलाकारों के बारे में ज़िक्र होता है और यह मेरे लिए गौरव कि बात है कि अब मैं भी उनमें से एक हूँ। मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने छोटे गाँवों के कलाकारों को आगे आने और अपने काम को दुनिया के सामने लाने के लिए इतना बड़ा मंच दिया है। पूरे देश को उन पर गर्व है।"

सचिन नरेंद्र अवसारी, महाराष्ट्र (रंगोली प्रतियोगिता)

"संस्कृति मंत्रालय द्वारा 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के तहत आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में तीसरा पुरस्कार पाकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मैंने देशभक्ति विषय चुना था और मेरी रंगोली में गाँधीजी को काले और सफेद रंग में और एक बच्चे को दिखाया गया था, जो अलग रंगों में था। यह दर्शाता है कि हमारा स्वतंत्रता संग्राम कैसा था और आज हम कैसे परिवर्तन का अनुभव कर रहे हैं।"

गुरु दत्त वांतेकर, गोवा (रंगोली प्रतियोगिता)

"जब मैंने इन 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' प्रतियोगिताओं के विज्ञापन देखे, तो मैंने एक देशभक्ति गीत लिखने का फैसला किया। विषय था स्थानीय स्वतंत्रता सेनानी/स्वतंत्रता के गुमनाम नायक। अपने अतीत से प्रेरणा लेते हुए मैंने हमारे स्थानीय नायक, कोयलाकुंटला नायक, उय्यलवाड़ा नरसिम्हा रेड्डी पर एक गीत लिखा। मुझे बहुत खुशी हुई जब मेरे गीत ने प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीता। मुझे गर्व हुआ और कल्पना से कहीं अधिक ख़ुशी भी हुई, ख़ासकर इसलिए कि मेरा गीत तेलुगु में था। मैं बहुत खुश था के एक तेलुगु गीत को ऐसी पहचान मिली। प्रधानमंत्री ने भी अपने 'मन की बात' में मेरा गाना बजाया और सराहा, जो मेरे लिए इस जीवन की सबसे बड़ी और कभी न भूलने वाली उपलब्धि है। यह बहुत अद्भुत है कि इन प्रतिगयोगिताओं के माध्यम से मेरे काम को सराहा गया और उय्यलवाड़ा को भी वह पहचान मिली, जिसके वह हकदार थे। मैं प्रधानमंत्री मोदी का दिल से धन्यवाद करता हूँ।"

विजय दुर्गा, आंध्र प्रदेश (देशभक्ति गीत प्रतियोगिता)

"संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में मैंने मैथिली में लिखा एक देशभक्ति गीत भेजा था, जिसके लिए मुझे 4 लाख रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' में इसका ज़िक्र किया और इससे मुझे काफी प्रेरणा मिली है। मुझे यह देखकर ख़ुशी होती है कि आज पूरे भारत के लोगों को ऐसे कई अवसर मिल रहे हैं और प्रधानमंत्री खुद लोगों की प्रतिभा को पहचान कर उसे राष्ट्रीय मंच पर ला रहे हैं।"

दीपक वत्स, उत्तर प्रदेश (देशभक्ति गीत प्रतियोगिता)

उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार

भारतीय कला और संगीत को समृद्ध करती प्रतिभाओं का सम्मान

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अक्सर भारत की संस्कृति और पारम्परिक प्रदर्शन कलाओं को आगे बढ़ाने में युवाओं की भूमिका के बारे में बात करते हैं। 'मन की बात' के 98वें एपिसोड में उन्होंने उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार के बारे में बात की।

संगीत नाटक अकादमी संगीत, नृत्य और नाटक की राष्ट्रीय अकादमी और देश में प्रदर्शन कला की शीर्ष संस्था है। इस अकादमी ने भारत की 102 युवा प्रतिभाओं का चयन किया, जिन्होंने वर्षों से प्रदर्शन कला के अपने सम्बन्धित क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है। पुरस्कार वर्ष 2019, 2020 और 2021 के लिए संयुक्त रूप से दिए गए। संगीत, नृत्य और नाटक का यह चार दिवसीय उत्सव फरवरी, 2023 में नई दिल्ली में मनाया गया।

उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार संगीत नाटक अकादमी द्वारा संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन करने वाले कलाकारों को पुरस्कृत करने के लिए आरम्भ किया गया था। संगीत, नृत्य, रंगमंच, पारम्परिक लोक/जनजातीय कला रूपों के उत्कृष्ट कलाकारों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। यह पुरस्कार 40 वर्ष की आयु तक के कलाकारों को राष्ट्रीय पहचान के साथ युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए दिया जाता है ताकि वे अपने चुने हुए क्षेत्रों में अधिक प्रतिबद्धता और समर्पण के साथ काम कर सकें। युवा पुरस्कार में 25,000 रुपये की राशि, एक अंगवस्त्रम् और एक प्लाक भी दिया जाता है।

शहनाई के उस्ताद

बिस्मिल्लाह ख़ान (1916-2006) ने शहनाई को नया अर्थ दिया और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई। वे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सबसे जानी-मानी शख्सियत बन गए। संगीत में उनकी गहन साधना और शहनाई पर आरोह-अवरोह, पुकार, खटका, मुर्की, ज़मज़म, तान और गमक के विशेषज्ञ निष्पादन ने शहनाई को एक नई पहचान दी। संगीत कार्यक्रमों में उनकी शहनाई की आवाज़ प्रमुखता से सुनाई देती थी और उनके दर्शक संगीत की तीव्रता और भावना की दुनिया में प्रवेश कर जाते थे। उन्हें भारत की आज़ादी की पूर्व संध्या पर दिल्ली के लाल किले में शहनाई बजाने का विशेष सम्मान भी प्राप्त हुआ था।

विजेताओं की कहानी, उनकी ज़ुबानी

"यह वास्तव में मेरे और मणिपुर के लोगों के लिए सम्मान की बात है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में मेरा नाम लिया। मेरे परदादा के समय से कई पीढ़ियों से मेरे परिवार ने पुंग की चमड़े की पट्टियों को चढ़ा करके मणिपुर के लोगों की सेवा की है। हमने कभी नहीं सोचा था कि संगीत नाटक अकादमी हमारे हुनर को पहचान कर मुझे यह सम्मान देगी। मेरी युवा पीढ़ी से अपील है कि आप समर्पण और अनुशासन के साथ जो भी पेशा चुनें, उसे जारी रखें। सफलता एक दिन आपके भाग्य में अपने आप आएगी।"

सैखोम सुरचंद्र, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार, 2019

"मुझे बहुत खुशी है कि आज मोदीजी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में दूर-दराज़ के इलाके में रहने वाले एक दिव्यांग का नाम लिया। मुझे यह पुरस्कार उत्तराखंड लोक संगीत जैसे राजुला-मालूशाही, न्युली, हुड़का बोल, जागर के प्रचार-प्रसार के लिए मिला है।"

पूरन सिंह, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार, 2021

"जब मैंने सुना कि प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में मेरा नाम लिया है, तो मैं भावुक हो गया। मैंने सोचा कि मैं इतने सालों से जो कर रहा हूँ, वह आज मेरी उपलब्धि है। इससे हमें आगे बढ़ने और बेहतर काम करने की प्रेरणा मिलेगी, क्योंकि हमारे देश की संस्कृति बहुत समृद्ध है, जिसे हमें पूरी दुनिया तक ले जाना है। सुरसिंगार एक ऐसा वाद्य यंत्र है, जो हमारे शास्त्रों में था, लेकिन 1950-60 के बाद यह पूरी तरह से लुप्त हो गया था। मैं जिस घराने से आता हूँ, सेमिया शाहजहाँपुर घराने से, इस वाद्य ने अतीत में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अब हम इसे थोड़ा-थोड़ा करके पुनर्जीवित करने की कोशिश कर रहे हैं। प्रधानमंत्री देश भर के सभी कलाकारों को सम्मान दे रहे हैं, कई कार्यक्रम चला रहे हैं, वे कई कलाकारों को बढ़ावा दे रहे हैं। मैं जहाँ भी प्रस्तुति देने गया हूँ, मैंने देखा है कि आज के युवा भारत की संस्कृति में रुचि ले रहे हैं। भारतीय संगीत का भविष्य सुरक्षित हाथों में है।"

जॉयदीप मुखर्जी, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार, 2019

2019

"मैं बचपन से यह पेरनी नाट्यम् कर रहा हूँ। मेरे गुरु ने मुझे उनके लिए गुरु, कला कृष्ण कुमारजी के पास भेजा, जहाँ पेरनी नाट्यम् की मेरी यात्रा शुरू हुई। तब से मैंने कभी हार नहीं मानी और कड़ी मेहनत करता रहा, आज मैं उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान पुरस्कार के कारण यहाँ खड़ा हूँ। अवॉर्ड लेने के अगले ही दिन मोदीजी ने हमें ट्विटर पर बधाई भी दी थी। प्रधानमंत्री युवाओं के बारे में सोचते हैं और मैं बहुत खुश हूँ और उनका आभारी हूँ। मैं सरकार को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ कि इतने सारे युवा लोगों और युवा कलाकारों का समर्थन करने के लिए, वे ही देश को आगे बढ़ाने में मदद करेंगे। मैं भारत सरकार से अनुरोध करता हूँ कि पेरनी नाट्यम् को शास्त्रीय नृत्य के अंतर्गत लाया जाए और हम इस नृत्य को पूरे देश में करने की कोशिश करेंगे और आगे बढ़ेंगे।"

राजकुमार नायक, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार, 2020

"प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जब वारकरी कीर्तन के लिए मेरा नाम लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' में लिया, मुझे मेरे दोस्तों के फ़ोन आने लगे और मुझे बहुत गर्व हुआ कि इतनी बड़ी हस्ती ने मेरा नाम लिया। मैं इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।"

संग्राम सुहास भंडारे, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार, 2021

"कार्नाटिक इंस्ट्रूमेंटल के लिए उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार प्राप्त करना एक बहुत ही खुशी का क्षण था। यह पहली बार है, जब संगीत नाटक अकादमी ने मैंडोलिन को यह पुरस्कार प्रदान किया है, इसलिए मैं वास्तव में धन्य हूँ और यह मेरे लिए एक महान क्षण है और तो और, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी 'मन की बात' में मेरे नाम का ज़िक्र किया। मुझे चुनने और मेरे पेशे को उजागर करने के लिए मैं उनकी बहुत आभारी हूँ। यह मेरे लिए बड़ी प्रेरणा है और यह मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है। मुझे उम्मीद है कि यह दूसरों को आगे आने और हमारी पारम्परिक कलाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करेगा।"

यू नागमणि, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार, 2021

2020

संध्या पुरेचा
अध्यक्ष, संगीत नाटक अकादमी

भारतीय संस्कृति की प्रतिनिधि हैं कलाएँ

'साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः' – यानी कि साहित्य, संगीत और कला के बिना अगर मनुष्य है तो वह पशु समान है। संगीत नाटक अकादमी में हम इसी विचार को आगे ले जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जो पंच प्रण दिए थे, उसमें सबसे पहला प्रण यह था कि हमारी विरासत पर हमें गर्व करना चाहिए और यही वे हमारी युवा पीढ़ी को सिखा भी रहे हैं। इन्हीं कलाओं, जिन्हें आत्मसात करते हुए युवा आगे ले जा रहे हैं, को प्रोत्साहन देने हेतु संगीत नाटक अकादमी द्वारा उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार शुरू किया गया था।

मैं प्रधानमंत्रीजी का आभार व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने युवा पीढ़ी को इतना प्रोत्साहित किया। उन्होंने डिजिटल इंडिया, इकॉनोमी, हेल्थ, स्वच्छ भारत अभियान में युवाओं के योगदान के साथ-साथ भारत की युवा शक्ति की कलाओं को पहचाना, जिससे लोक संगीत, नृत्य और कला को बहुत बढ़ावा मिला है। सभी कलाकार बहुत ही भावविभोर हैं कि उनके चिंतन, मनन और अपने-अपने क्षेत्र में उनकी साधना का फल प्रधानमंत्री की सराहना के रूप में आया है। वे उत्साहित हैं और अच्छा काम करने के लिए रोमांचित हैं। मुझे यह लगता है की युवाओं को इससे यह सन्देश मिला है कि भारतीय कलाओं और अपनी धरोहर को उन्हें आगे बढ़ाते रहना है।

सुरसिंगार वाद्ययंत्र, जो आज प्रायः लुप्त हो चुका है, जॉयदीप मुख़र्जी ने इसे आगे बढ़ाया, नारी शक्ति आज तक मैंडोलिन के क्षेत्र में नहीं थीं, परन्तु नागमणिजी ने उसे यथार्थ किया, वारकरी कीर्तन, जिसे पुरस्कृत किए जाने की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था, अब उसे पहचान मिली है और इन सभी को स्वयं राष्ट्र के नेता ने मान्यता दी है। करकट्टम, पेरिनी ओडिसी जैसे कई लोक नृत्य और मैतेई पुंग जैसे अन्य वाद्य यंत्रों को 'मन की बात' में जगह मिली। आज देश भर के युवा कलाकारों में अपने-अपने क्षेत्र में आगे बढ़ने का उत्साह हम देख सकते हैं। मुझे लोगों के ढेरों सन्देश मिले हैं और उन्होंने मुझे कहा कि मैं प्रधानमंत्री को 'मन की बात' में उन सभी के नाम का उल्लेख करने के लिए आभार व्यक्त करूँ।

प्रधानमंत्री का दूसरा प्रण यह था कि भारत के विकास में युवा पीढ़ी का योगदान रहे और वे पूरी तरह से इस लक्ष्य में जुड़ें। हमारी सॉफ़्ट पावर हमारी संस्कृति है और अगर हमें इस पावर को आगे लेकर जाना है तो हमारे युवाओं को इसके साथ जुड़ना पड़ेगा। इसी वजह से संगीत नाटक अकादमी ने अमृत युवा कला महोत्सव का आयोजन किया। इसके अंतर्गत 75 दिनों के लिए 75 जगहों में युवा कलाकारों के लिए कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। इसमें, चाहे वे किसी जनजाति से हों, चाहे वे लोक संगीतकार हों, नर्तक हों, पपेट्री मास्टर हों, उन सभी कलाकारों को प्रोत्साहन देकर परफॉर्मेंस किए जा रहे हैं। उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार से भी उन कलाकारों को, जो दो-तीन दशकों से अपनी कला के साथ जुड़े हैं और आगे बढ़ रहे हैं, प्रोत्साहन मिल रहा है। इन सब के कारण हमारी युवा पीढ़ी विज्ञान, गणित और इंजीनियरिंग के साथ-साथ अपनी कलात्मक धरोहर को सँजो के आगे बढ़ रही है।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि 'नृत्यम संस्कृति वर्धनम' - संस्कृति और संस्कार का संवर्धन और जतन करने का कार्य सभी कलाएँ करती हैं। इसके साथ-साथ सत् चित्त आनन्द यानी ब्रह्मानंद की प्राप्ति होती है, क्योंकि हम दूसरों के लिए नहीं नाचते, हम दूसरों के लिए नहीं गाते, हम वह अपनी आत्मा के लिए करते हैं। इसलिए हम सम्पूर्ण साधना करते हैं। हर भारतीय कला 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन' की भावना को प्रोत्साहित करती है। इन्सान को कर्म करते रहना चाहिए

और इसी भाव में स्वामी विवेकानंद ने भी युवाओं को सन्देश दिया था – ‘उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत’ यानी कि आप उठो, जागो और ज्ञान की प्राप्ति तक रुको मत। भारतीय कलाएँ इन सभी सन्देशों से जुड़ी हैं। इसलिए भारतीय कलाएँ स्वयं में अनूठी हैं।

भारत में कठपुतली कलाकार भी सुन्दरता से रामायण, महाभारत व ऐसी आध्यात्मिक कथाओं द्वारा हमारे भारतीय मॉरल्स और वैल्यूज़ को हमारी अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। आज की पीढ़ी अपने इतिहास के बारे में जानना चाहती है – चाहे वह पपेट के माध्यम से हो, नृत्य के माध्यम से हो या संगीत के माध्यम से हो, युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति से जुड़ना चाहती है। यही हमारी कलाओं की सशक्तता है कि वे भारतीय संस्कृति का प्रदर्शन करती हैं।

मेरा इस संस्था में पहला काम ही अमृत युवा कला महोत्सव की शुरुआत करना था। हमारे आने वाले कार्यक्रमों में भी हम स्कूल व कॉलेज के छात्रों से जुड़ेंगे और हमारे वरिष्ठ कलाकारों के साथ विवेचना करेंगे ताकि हमारी नई पीढ़ी बहुआयामी कला और भारतीय संस्कृति के बारे में जान सकें।

सरकार द्वारा भारत की लुप्तप्राय कलाओं को बढ़ावा देने पर डॉ. संध्या पुरेचा के विचार जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार युवाओं के लिए प्रोत्साहन

“हमारी जो पारम्परिक कलाएँ हैं, ख़ास करके दर्शन कलाएँ, जिसमें फ़िलोसॉफ़ी है, स्कल्पचर है, पेंटिंग है, हमारे उत्सव हैं, हमारी बुनाई-कढ़ाई, नृत्य, संगीत और हमारे साहित्य हैं, ये सभी इतने जुड़े हुए हैं। अब लोगों को वह बात समझ आ रही है, जिसको मैंने वर्षों पहले नृत्य योग कहा था। हमारे नटराज की जो कल्पना है, उनकी मूर्ति है, वह एक योगी की है, लेकिन वह योग डायनेमिक है। योग को लोग समझते हैं कि आप बैठ के आसन मात्र करो, वो तो है ही, क्योंकि वह शुरुआत है, पर आप जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, हमारा नृत्य हमें हमारे पूरे अस्तित्व से जोड़ता है। आप हमारे जनजातियों के नृत्य देख लीजिए, हमारे लोक नृत्य देख लीजिए, या हमारे संगीत सुनें – इनके साथ हमारी पूरी चेतना है, जो नृत्य करती है। यह सभी विश्व को मंत्रमुग्ध कर देती है और यही हमारी संस्कृति का आकर्षण है।

उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार कलाकारों की साधना, तपस्या और परिश्रम का फल है। इससे उन्हें प्रोत्साहन और अपने कलात्मक क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। जब हम उस उम्र में थे तो हमारे लिए ऐसे कोई पुरस्कार नहीं थे और हमें तपस्या, साधना और मेहनत से अपना स्थान बनाना पड़ा— अपने समाज में, भारत वर्ष में और विश्व में। मुझे लगता है कि आज की युवा पीढ़ी को, जो टेक्नोलॉजिकली सक्षम है, जो सोशल मीडिया पर छाई रहती है, साथ ही तपस्या, साधना और परिश्रम के मूल्य को नज़रअंदाज़ नहीं करती, यह पुरस्कार उन्हें और उत्साह से भर देगा।

‘मन की बात’ में इतनी देर तक इस विषय में प्रधानमंत्री का बात करना कलाकारों की और उनके कला के क्षेत्र की हौसला अफ़ज़ाई करता है। कला क्षेत्रों को पुनर्जीवन देने में प्रधानमंत्री के कार्यक्रम ‘मन की बात’ और इस पुरस्कार का बहुत बड़ा योगदान है और आज के युवा कलाकार भी इसकी कीमत समझते हैं।”

सोनल मानसिंह
भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना,
राज्य सभा सांसद

प्रसिद्ध ओडिसी नृत्यांगना, सोनल मानसिंह के विचार जानने के लिए QR कोड स्कैन करें

ई-संजीवनी

स्वस्थ भारत के लिए एक डिजिटल वरदान

"देश के सामान्य मानव के लिए, मध्यम वर्ग के लिए, पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वालों के लिए, ई-संजीवनी जीवन रक्षा करने वाला ऐप बन रहा है... इस ऐप का उपयोग करके अब तक टेली-कंसल्टेशन करने वालों की संख्या 10 करोड़ को पार कर गई है। ये है भारत की डिजिटल क्रांति की शक्ति।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

"प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा ई-संजीवनी का उल्लेख करने से ऐप के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने और इसके उपयोग को बढ़ाने में मदद मिलेगी। जैसे-जैसे अधिक लोग ऐप के लाभों के बारे में जागरूक होंगे, इससे विश्वास और स्वीकृति बढ़ेगी।"

-डॉ. रणदीप गुलेरिया
आंतरिक चिकित्सा के अध्यक्ष,
मेदांता और पूर्व निदेशक, एम्स

कोविड-19 महामारी के कारण दुनिया भर में हेल्थकेयर सेक्टर में अभूतपूर्व चुनौतियाँ सामने आई हैं और दुनिया भर में हेल्थकेयर के तरीकों में काफ़ी बदलाव भी आया है, हालाँकि भारत ने पहले ही अपनी प्रमुख पहल 'डिजिटल इंडिया' के माध्यम से डिजिटल ट्रांसफ़ॉर्मेशन के लिए ज़मीनी स्तर पर काम किया था। इसके परिणामस्वरूप शीघ्र ही आरोग्य सेतु और Co-WIN जैसे ऐप को लॉन्च करना सम्भव हो पाया। इन ऐप्स ने लोगों को संक्रमण के जोखिम का आकलन करने में सक्षम बनाया और दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान को बढ़ावा मिला। ठीक उसी समय देश ने दुनिया के सबसे बड़े सरकार द्वारा संचालित टेलीमेडिसिन प्लेटफ़ॉर्म ई-संजीवनी को लॉन्च करने का फैसला किया और स्वास्थ्य रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण के क्षेत्र में भी तेज़ी से प्रगति की।

ई-संजीवनी को नवम्बर, 2019 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा लॉन्च किया गया था। राष्ट्रीय टेलीमेडिसिन सेवा के माध्यम से डॉक्टरों को दूर-दराज़ के इलाकों से मरीज़ों को मेडिकल कंसल्टेशन प्रदान करने की सुविधा मिलती है और इससे मरीज़ों को बार-बार अस्पताल जाने की आवश्यकता नहीं होती है। ई-संजीवनी सेवा दो रूपों, यानी ई-संजीवनी आयुष्मान भारत

हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर (AB-HWC) और ई-संजीवनी OPD में उपलब्ध है।

ई-संजीवनी आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, अस्सिटेड टेली-कंसल्टेशन प्रदान करके ग्रामीण-शहरी डिजिटल हेल्थ डिवाइड को कम करने का प्रयास करता है। यह वर्टिकल हब-एंड-स्पोक मॉडल पर काम करता है। इसमें AB-HWC राज्य स्तर पर स्थापित किए जाते हैं। ये स्पोक के रूप में कार्य करते हैं, जिन्हें हब के साथ मैप किया जाता है। इसमें ज़ोनल स्तर पर डॉक्टर और विशेषज्ञ शामिल हैं। ई-संजीवनी OPD ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों में समान रूप से नागरिकों को सेवाएँ प्रदान करता है। इसमें स्मार्टफ़ोन, टैबलेट आदि जैसी तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि मरीज़ों के रहने के स्थान पर डॉक्टर से परामर्श लेने की सुविधा हो, चाहे वे कहीं भी रहें।

ई-संजीवनी देश के ग्रामीण और दूर-दराज़ इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए वरदान बनकर आया है। इससे पहले लोगों को अस्पताल तक पहुँचने के लिए कई किलोमीटर जाना पड़ता था। उन्हें लम्बी कतारों में इंतज़ार करना पड़ता था, काम पर न होने के कारण अपनी दैनिक मज़दूरी खोनी पड़ती थी और आने-जाने के किराए और परीक्षणों पर पैसा खर्च करना पड़ता था, लेकिन ई-संजीवनी ऐप से टेली-कंसल्टेशन, यानी दूर बैठे वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से डॉक्टर से अपनी बीमारी के बारे में सलाह ले सकते हैं और अब लोग बिना कोई पैसा खर्च किए विशेषज्ञ से कंसल्टेशन अपने घर पर ही प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा कोविड-19 महामारी के समय जब लोग डिप्रेशन जैसी अनेक मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित थे, क्योंकि एहतियात के तौर पर लगभग पूरी दुनिया को एक-दूसरे से अलग-थलग कर दिया गया था; ऐसे समय में ई-संजीवनी

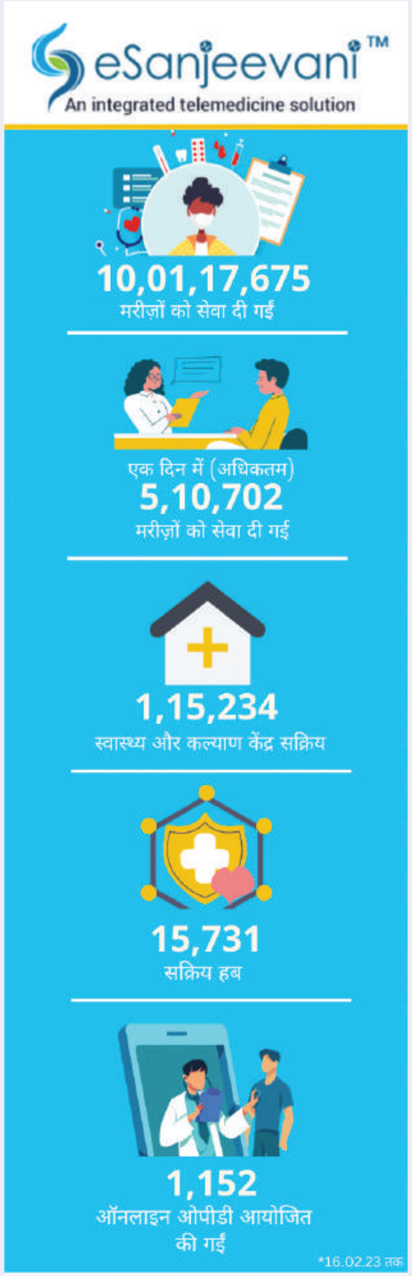

लोगों का साइकेट्रिस्ट से कंसल्टेशन करके खुद को ठीक करने के लिए एक सुरक्षित माध्यम बन गया। एक तरह से ई-संजीवनी ने उन सभी लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को सही रखने की दिशा में एक नया द्वार भी खोल दिया है, जो इस विषय से जुड़ी विभिन्न स्टिग्मा के कारण पेशेवर मदद नहीं लेते।

देश के विभिन्न कोनों से लोगों को 10 करोड़ कंसल्टेशन प्रदान करके, ई-संजीवनी ने केवल 3 वर्षों में सरकार द्वारा संचालित दुनिया का सबसे बड़ा टेलीमेडिसिन प्लेटफ़ॉर्म होने का गौरव प्राप्त किया है। स्वास्थ्य के प्रबंधन को बेहतर और आसान बनाने के लिए स्वास्थ्य रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए, ई-संजीवनी रोगियों को आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट (ABHA) नम्बर जेनरेट करने में भी मदद करता है। यह एक रोगी की 14 अंकों की विशिष्ट ID है, जो उनके हेल्थ रिकॉर्ड को कई सिस्टम और स्टेकहोल्डर्स से जोड़ती है। अब तक लगभग 30 करोड़ ABHA IDs बनाए गए हैं और राष्ट्रीय डिजिटल हेल्थ इकोसिस्टम के साथ एकीकृत किए गए हैं, जिनमें से 45,000 से अधिक ABHA ID ई-संजीवनी ऐप के माध्यम से बनाई गई हैं।

ई-संजीवनी इस बात का एक प्रमुख उदाहरण है कि कैसे भारत सरकार द्वारा की गई डिजिटल पहल देश में हेल्थकेयर सेक्टर में क्रांति ला रही है। दूरस्थ कंसल्टेशन को सम्भव बना कर, ई-संजीवनी स्वास्थ्य सेवाओं को ग्रामीण और दूरदराज़ के क्षेत्रों में लोगों के लिए सुलभ बना रहा है। ऐसे में ई-संजीवनी की सफलता ने व्यापक हेल्थ कवरेज के लक्ष्य तक पहुँचने और प्रत्येक भारतीय के लिए हेल्थकेयर को अधिक सुलभ, प्रभावी और सस्ता बनाने में डिजिटल पहल की क्षमता को प्रदर्शित किया है।

भारत में निर्बाध डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं को सक्रिय करता यूनिफ़ाइड हेल्थ इंटरफ़ेस

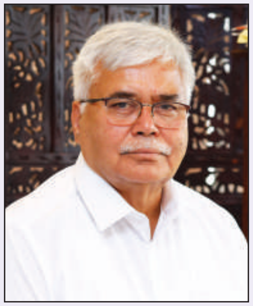

आर. एस. शर्मा
पूर्व सीईओ, राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण

यूनिफ़ाइड हेल्थ इंटरफ़ेस (UHI) आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (ABDM) स्टैक की बुनियादी परतों में से एक है, जो स्वास्थ्य सेवाओं की डिस्कवरेबिलिटी और डिलीवरी पर केंद्रित है। जहाँ मौजूदा ABDM की मूल इकाइयाँ व्यक्तिगत स्वास्थ्य डाटा का इंटरऑपरेबल एक्सचेंज तथा डॉक्टरों, रोगियों और स्वास्थ्य सुविधाओं की रजिस्ट्री करती हैं, वहीं UHI इन मूल इकाइयों का लाभ उठा कर उपभोक्ताओं को एंड-टू-एंड निर्बाध अनुभव देने का काम करेगा।

यह ABDM तंत्र के भीतर एक ओपन नेटवर्क होगा, जो टेलिकंसल्टेशन जैसी डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं को परस्पर संचालन योग्य बनाएगा। UHI विभिन्न हितधारकों के लिए विभिन्न समाधानों का उपयोग करते समय सम्प्रेषण या संवाद को उसी तरह आसान बनाएगा, जैसे UPI की मदद से आसानी से भुगतान होता है। UHI-इनेबल्ड एंड यूज़र ऐप्लिकेशंस की मदद से मरीज़, UHI गेटवे से अपनी पसंद की किसी भी ऐप्लिकेशन को चुन कर विभिन्न स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की सेवाएँ तलाशने, बुकिंग करने, सेवा लेने का काम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, ABC प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध डॉक्टर XYZ प्लेटफॉर्म का उपयोग कर रहे मरीज़ को टेलि-कंसल्टेशन प्रदान नहीं कर सकता। UHI इन सभी प्लेटफ़ॉर्म्स को खुले प्रोटोकॉल के माध्यम से एक-दूसरे के साथ संवाद करने में सक्षम करेगा और यह बड़ा ही सहज और सरल अनुभव होगा। यह डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने की मौजूदा विधि के विपरीत है, जिसमें मरीज़ और चिकित्सक केवल एक ही प्लेटफ़ार्म या ऐप्लिकेशन के माध्यम से कार्य कर सकते हैं। UHI की मदद से वे अपने सम्बन्धित डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स के साथ काम करना भी जारी रख सकते हैं और स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली का हिस्सा बन सकते हैं। विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म्स पर सम्भावित मरीज़ों की उपस्थिति देखना सम्भव होने से स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों को भी लाभ मिलेगा।

अभी नागरिक किसी भी डॉक्टर के साथ ऑनलाइन परामर्श बुक कर सकते हैं, किसी भी डॉक्टर के साथ अपॉइंटमेंट बुक कर सकते हैं, अपने आस-पास ब्लड

बैंक ढूँढ़ सकते हैं, घर पर लैब टेस्ट बुक कर सकते हैं या एम्बुलेंस से पिक अप या ड्रॉप का लाभ उठा सकते हैं। उपभोक्ता को ड्रीफकेस, प्रिस्टीन केयर, प्रैक्टो, लिब्रेट, पेटीएम, आरोग्य सेतु जैसे लगभग दस स्वास्थ्य ऐप्लिकेशन और स्वास्थ्य सेवा प्रदाता मेडिबडि, बजाज फिन्सर्व, प्रिस्टीन और सरकार के प्रमुख ऐप Co-WIN और ORS को UHI के साथ सफलतापूर्वक एकीकृत किया गया है और ये बाज़ार में उतरने की तैयारी में हैं। सरकार की राष्ट्रीय टेलि-कंसल्टेशन सेवा ई-संजीवनी भी ABDM सक्षम हो गई है और इसकी अधिकांश सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच होने से UHI नेटवर्क को भारी लाभ मिला है।

आरोग्य सेतु, जो मुख्य रूप से एक कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग ऐप्लिकेशन था, उसका UHI के माध्यम से हैल्थ एंड वेलनेस रेफ़्रेंस ऐप्लिकेशन के रूप में नवीनीकरण किया जा रहा है, जिससे नागरिक सुविधाजनक कई स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे। Co-WIN को 'डॉकमित्र' के रूप में फिर से तैयार किया जा रहा है, जो छोटे क्लीनिक और नर्सिंग होम के लिए एक लाइटवेट स्वास्थ्य प्रबन्धन सूचना प्रणाली है। इससे डॉक्टरों को अपने अपॉइंटमेंट निर्धारित करने, UHI के माध्यम से टेलि-कंसल्टेशन सेवाएँ प्रदान करने, ई-प्रेस्क्रिप्शन लिखने और अपनी क्लिनिकल प्रैक्टिस का कुशलतापूर्वक प्रबन्धन करने में सुविधा मिलेगी।

UHI के तहत यह मॉडल टेलि-कंसल्टेशन जैसी इंटरऑपरेबल स्वास्थ्य सेवाओं को सक्षम करने के अलावा सार्वजनिक एवं निजी भागीदारी का एक आदर्श उदाहरण है। आने वाले समय में UHI मरीज़ों को अपनी पसंद के किसी भी प्लेटफ़ार्म से कई डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने की सुविधा देकर पहुँच, गुणवत्ता और दक्षता बढ़ाएगा, जिससे भारत को डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएँ लास्ट माइल तक प्रभावी ढंग से प्रदान करने के कौशल को बढ़ावा मिलेगा।

डॉ. रणदीप गुलेरिया

आंतरिक चिकित्सा के अध्यक्ष, मेदांता और पूर्व निदेशक, एम्स

ई-संजीवनी ऐप : स्वास्थ्य सेवाएँ आपके द्वार

भारत, कोविड-19 महामारी के दौरान, नवाचार का ध्वजवाहक बन गया। दुनिया के सबसे विकसित देश भी जब संघर्ष कर रहे थे, भारत स्वास्थ्य सेवाओं को नागरिकों के लिए अधिक सुलभ बनाने के लिए विभिन्न नवाचारों के साथ सामने आया। आज, भारत का स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र बड़े बदलाव के दौर से गुज़र रहा है और ई-संजीवनी इस बदलाव में सबसे आगे है। पूरे देश में अपनी पहुँच के साथ ई-संजीवनी लोगों को बड़े शहरों के विशेषज्ञों से परामर्श करने में मदद कर रहा है, वह भी बिना अस्पताल गए।

यह ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद है, जिन्हें पहले परामर्श के लिए दूर-दराज़ के स्थानों पर जाना पड़ता था, जिसके परिणामस्वरूप बड़े शहरों में यात्रा करने और रहने में अतिरिक्त खर्च के साथ-साथ मज़दूरी का नुकसान भी होता था। अब वे अपने घर बैठे ही ऐप के ज़रिए परामर्श और निरंतर इलाज के बारे में जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। इससे लम्बे समय तक चलने वाली बीमारी जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, गुर्दे की समस्या आदि के रोगियों को भी लाभ हुआ है। चूँकि भारत में गैर-संचारी रोग बढ़ रहे हैं और इनमें लगातार इलाज की आवश्यकता होती है, ई-संजीवनी ने लोगों के घरों में स्वास्थ्य सेवाएँ लाकर इस समस्या का समाधान किया है।

कई लाभों के साथ-साथ ई-संजीवनी ऐप ने हमारे देश में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक, यानी ग्रामीण और दूरदराज़ के क्षेत्रों में डॉक्टरों की कमी को भी हल कर दिया है। भारत के टियर-1 शहरों में डॉक्टरों की संख्या सबसे अधिक है और जैसे-जैसे हम टियर-2, टियर-3 और दूरस्थ क्षेत्रों की ओर बढ़ते हैं, यह संख्या कम होती जाती है। ऐसे क्षेत्रों में डॉक्टरों की कमी के कारण लोग आमतौर पर घरेलू उपचार या खुद ही दवा लेना शुरू कर देते हैं, जो उन्हें ठीक करने में मदद नहीं करती है और कभी-कभी हानिकारक भी हो जाती है। हालाँकि ई-संजीवनी के आगमन के

साथ लोग अपने मोबाइल उपकरणों के माध्यम से डॉक्टरों तक आसानी से पहुँच सकते हैं। ऐप उन्हें सही परामर्श, निदान, दवा और आगे के इलाज में मदद कर रहा है। ऐप देश के ग्रामीण और दूरदराज़ के इलाकों में मानव संसाधनों की कमी को पूरा कर रहा है।

जैसा कि प्रधानमंत्री ने अपने हालिया 'मन की बात' सम्बोधन में राष्ट्र के साथ साझा किया, 10 करोड़ से अधिक लोगों ने डॉक्टरों से परामर्श करने के लिए इस ऐप का उपयोग किया है। अगर हम इस संख्या का विश्लेषित विवरण देखें तो हम आसानी से जान सकते हैं कि इसका सबसे ज़्यादा फ़ायदा ग्रामीण इलाकों के लोगों को हुआ है। इससे उन लोगों के जीवन में महत्त्वपूर्ण बदलाव आया है, जो दूरदराज़ के क्षेत्रों में रहते हैं या जो अपनी स्थिति के कारण अस्पताल नहीं जा सकते हैं।

भारत में टेलीमेडिसिन का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। आने वाले समय में ई-संजीवनी जैसे ऐप के माध्यम से परामर्श की संख्या में वृद्धि होना तय है। ऐसी कई नई तकनीकें हैं, जिन्होंने रोगी के लिए स्वास्थ्य देखभाल को आसान बना दिया है। उदाहरण के लिए, महामारी के दौरान, अधिकांश रोगियों ने अपनी ऑक्सीजन के स्तर की जाँच करने के लिए ऑक्सीमीटर जैसे उपकरणों का उपयोग किया और अपने मोबाइल फोन के माध्यम से डॉक्टरों को इसके बारे में बताया। इसी तरह, आज मरीज़ घर पर ही अपने ईसीजी की निगरानी कर सकते हैं और बिना घर से बाहर निकले फोन के माध्यम से डॉक्टरों को स्थिति के बारे में बता सकते हैं। मेरा मानना है कि अगर ई-संजीवनी को इन तकनीकों के साथ एकीकृत किया जाता है, तो हम ऐप के माध्यम से उचित निदान और चिकित्सीय प्रणाली सुनिश्चित कर सकते हैं तथा इसे और भी आगे ले जा सकते हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा ई-संजीवनी का उल्लेख करने से ऐप को अधिक लोकप्रियता हासिल करने और इसके उपयोग को बढ़ाने में मदद मिलेगी। जैसे-जैसे अधिक लोग ऐप के लाभों के बारे में जागरूक होंगे, इसके प्रति अधिक विश्वास और स्वीकृति बढ़ेगी। ई-संजीवनी ऐप ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में नवाचार के लिए एक मिसाल कायम की है और दिखाया है कि चुनौतीपूर्ण समय के दौरान भी भारत स्वास्थ्य सेवाओं को नागरिकों के लिए अधिक सुलभ बनाने के लिए अभिनव समाधानों के साथ आ सकता है।

भारत में टेलीमेडिसिन के भविष्य के बारे में डॉ. रणदीप गुलेरिया के विचार जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

भारत में हेल्थकेयर डिलीवरी में क्रांतिकारी बदलाव

ई-संजीवनी ऐप का प्रभाव

तेज़ी से आगे बढ़ रहे भारत में डिजिटल इंडिया की ताकत आज हर कोने में नज़र आती है। डिजिटल इंडिया की भावना को घर-घर तक पहुँचाने में अलग-अलग ऐप्लिकेशंस बड़ी भूमिका निभा रही हैं। ई-संजीवनी एक ऐसा ऐप है, जिसने स्वास्थ्य परामर्श को परेशानी मुक्त और कुशल बना दिया है। ई-संजीवनी एक टेली-कंसल्टेशन ऐप है, जिसने रोगियों और चिकित्सकों के लिए वीडियो कॉल के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ना सम्भव बना दिया है। यह ऐप विशेष रूप से कोविड महामारी के दौरान चिकित्सकों और रोगियों, दोनों के लिए एक वरदान साबित हुआ है।

प्रधानमंत्री ने अपने हालिया 'मन की बात' कार्यक्रम में सिक्किम के डॉ. मदन मणि से बातचीत की, जिन्होंने अपने राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को सैकड़ों ई-संजीवनी टेली-कंसल्टेशन प्रदान किए हैं। बातचीत के दौरान डॉ. मणि ने बताया कि ई-संजीवनी ऐप उनके क्षेत्र में एक बड़ी मदद के रूप में आया है, क्योंकि आज चिकित्सक उन गाँवों में भी अपनी सेवाएँ दे पा रहे हैं, जहाँ कोई जन स्वास्थ्य केंद्र मौजूद नहीं हैं। अपने राज्य सिक्किम के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा, "सिक्किम में ऐसे गाँव हैं, जहाँ लोगों को अपने निकटतम जन स्वास्थ्य केंद्र पहुँचने के लिए 100-200 रुपये खर्च करने पड़ते हैं और कई बार जन स्वास्थ्य केंद्र में चिकित्सकों की अनुपस्थिति के कारण उन्हें परामर्श नहीं मिल पाता। सिक्किम में मधुमेह और उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोगों की संख्या अधिक है, यह एक और कारण है कि ऐसे रोगियों को बार-बार जन स्वास्थ्य केंद्र आने में परेशानी होती है, लेकिन ई-संजीवनी के माध्यम से शहरों में बैठे चिकित्सक इन लोगों से वीडियो कॉल पर जुड़ सकते हैं और उनके स्वस्थ रहने में मदद कर सकते हैं।”

ई-संजीवनी का उपयोग कर रहे रोगियों के अनुभवों को जानने के लिए प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश के चंदौली ज़िले के श्री मदन मोहन से भी बातचीत की। ऐप के बारे में विस्तृत बातचीत के दौरान मदन मोहन ने बताया, "मुझे मधुमेह है। मेरे घर से निकटतम अस्पताल लगभग 5-6 किलोमीटर दूर है। अस्पताल में भी घंटों लाइन में लगकर इंतज़ार करना पड़ता था और कई बार चिकित्सक के न आने के कारण दूसरे दिन वापस जाना पड़ता था, लेकिन ई-संजीवनी के लॉन्च के बाद से मैं कभी बिना इलाज के नहीं लौटा हूँ। अस्पताल में स्वास्थ्यकर्मी मरीज़ की जाँच करते हैं, फिर वीडियो कॉल के ज़रिए डॉक्टरों से बात कराते हैं और उचित परामर्श के बाद बिना किसी खर्च के हमें दवा देते हैं। यह ऐप मेरे और मेरे जैसे कई अन्य मरीज़ों के लिए बहुत फ़ायदेमंद है।”

ई-संजीवनी ऐप भारत के आम आदमी के लिए एक जीवनरक्षक ऐप के रूप में उभर रहा है। यह ऐप प्रौद्योगिकी की शक्ति का लाभ उठा और रोगियों और डॉक्टरों के बीच दूरस्थ परामर्श को सक्षम कर स्वास्थ्य सेवा वितरण में एक आदर्श बदलाव ला रहा है।

स्वास्थ्य सेवाओं तक आसान पहुँच प्रदान करके इस ऐप ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच की दूरी को कम करने में मदद की है और स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक न्यायसंगत बनाया है। सही मायने में ई-संजीवनी ऐप स्वस्थ भारत का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

यूनिफ़ाइड पेमेंट्स इंटरफ़ेस

विश्व भर में भुगतान के नए युग का सूत्रपात

“भारत की डिजिटल क्रांति की शक्ति का असर हम आज हर क्षेत्र में देख रहे हैं। भारत के UPI की ताकत भी आप जानते ही हैं। दुनिया के कितने ही देश इसकी तरफ आकर्षित हैं। कुछ दिन पहले ही भारत और सिंगापुर के बीच UPI-PayNow लिंक लॉन्च किया गया। अब सिंगापुर और भारत के लोग अपने मोबाइल फ़ोन से उसी तरह पैसे transfer कर रहे हैं, जैसे वे अपने-अपने देश के अंदर करते हैं। मुझे खुशी है कि लोगों ने इसका लाभ उठाना शुरू कर दिया है। भारत का UPI ईज़ ऑफ़ लिविंग को बढ़ाने में बहुत मददगार साबित हुआ है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“UPI-PayNow लिंकेज देश की सीमा के बाहर भुगतान के लिए एक इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास में महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह शीघ्रतापूर्ण, किफायती और अधिक पारदर्शी सीमा पार भुगतान को लेकर G20 की वित्तीय समावेशन प्राथमिकताओं के अनुरूप है।”

दिलीप अस्बे
प्रबंध निदेशक और सीईओ,
भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम

वर्ष 2016 नेशनल पेमेंट कॉरपोरेशन ऑफ़ इंडिया (NPCI) ने यूनिफ़ाइड पेमेंट्स इंटरफ़ेस (UPI) नामक एक अनूठी, मोबाइल-सक्षम तत्काल भुगतान प्रणाली शुरू की। बात करें वर्ष 2023 की तो आज यह मेड-इन-इंडिया रिटेल पेमेंट इंटरफ़ेस सिंगापुर के PayNow से आधिकारिक लिंकेज के साथ ग्लोबल हो गया है। दो देशों के बीच यह अपनी तरह का पहला सहयोग है।

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) और मोनेटरी अथॉरिटी ऑफ़ सिंगापुर (MAS) के बीच सहयोग से स्थापित यह नया लिंक उपभोक्ता को सिर्फ एक मोबाइल ऐप से सुविधाजनक, सुरक्षित, त्वरित और लागत प्रभावी तरीक़े से रीयल-टाइम क्रॉस-बॉर्डर पर्सन टू पर्सन (पी2पी) रेमिटेंस करने में मदद करेगा। बैंक खातों या ई-वॉलेट में रखा फंड अब केवल UPI ID, मोबाइल नम्बर या वर्चुअल पेमेंट एड्रेस (VPA) का उपयोग करके भारत से और भारत में स्थानांतरित किया जा सकता है।

विदेश मंत्रालय के अनुसार सिंगापुर में लगभग 6.5 लाख भारतीय रहते हैं। इस ऐतिहासिक क़दम से उन्हें, विशेष रूप से प्रवासी श्रमिकों, छात्रों, छोटे व्यवसायियों और उद्यमों को लाभ होगा और दोनों देशों के बीच व्यापार और धन-प्रेषण का प्रवाह बढ़ेगा। विश्व बैंक की दिसम्बर, 2022 की एक रिपोर्ट के अनुसार 2023 में सिंगापुर से भारत में धन-प्रेषण 100 अरब डॉलर को पार करने की राह पर था, जिससे यह भारत में सबसे अधिक धन-प्रेषण करने वाला चौथा देश बन गया, जो भारत में विदेशों से आने वाले कुल धन-प्रेषण का 5.7 प्रतिशत है।

UPI एक क्रांतिकारी, यूज़र-फ्रेंडली, तत्काल भुगतान का साधन है, जो अंतर-बैंक लेन-देन की सुविधा प्रदान करता है और इसने भारत में डिजिटल भुगतान बड़े पैमाने पर अपनाए जाने में मदद की है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के अनुसार, पिछले पाँच वर्षों में भारत में कुल डिजिटल भुगतान की मात्रा लगभग 50 प्रतिशत की औसत वार्षिक दर से बढ़ी है और UPI में इसका विस्तार और भी तेज़ (लगभग 160 प्रतिशत सालाना) रहा है।

UPI आज भारत में सबसे पसंदीदा भुगतान साधनों में से एक है, जिसमें हर महीने एक अरब से अधिक लेन-देन होते हैं। भारत में UPI लेन-देन कुल डिजिटल भुगतान का 75 प्रतिशत है। NPCI के अनुसार, वित्त वर्ष 21-22 में पंजीकृत UPI लेन-देन 4,500 करोड़ थे, जो पिछले तीन वर्षों में आठ गुना और पिछले चार वर्षों में 50 गुना वृद्धि दर्शाता है। 2022 में UPI के माध्यम से 7,400 करोड़ के लेन-देन किए गए और केवल जनवरी, 2023 में UPI लेन-देन 803.6 करोड़ रुपये तक पहुँच गया।

UPI का मुख्य कार्य बैंक खातों के बीच आसान और सुरक्षित धन हस्तांतरण में मदद करना है। UPI एक ही मोबाइल ऐप्लिकेशन में कई बैंक खातों को जोड़ता है, जिससे सिमलेस फंड ट्रांसफ़र और मर्चेंट पेमेंट की सुविधा मिलती है। यह ‘पीयर टू पीयर’ और ‘पीयर टू मर्चेंट’ कलेक्शन रिक्वेस्ट्स को भी सक्षम बनाता है, जिसे शेड्यूल किया जा सकता है और अनुरोध के अनुसार भुगतान किया जा सकता है।

UPI भारत के डिजिटल पेमेंट

भारतीय रिज़र्व बैंक और मोनेटरी अथॉरिटी ऑफ़ सिंगापुर का एक संयुक्त प्रयास।

भारत और सिंगापुर के बीच रीयल-टाइम क्रॉस-बॉर्डर रेमिटेंस ट्रांज़ेक्शंस सक्षम करता है।

दैनिक लेन-देन की सीमा – ₹60,000 (लगभग 1,000 सिंगापुर डॉलर के बराबर) है।

केवल 'विदेश में रिश्तेदारों के रखरखाव' और 'उपहार' के प्रयोजनों के लिए P2P रेमिटेंस की अनुमति है।

भाग लेने वाले बैंक
भारत : एक्सिस बैंक, DBS बैंक इंडिया, ICICI बैंक, इंडियन बैंक, इंडियन ओवरसीज़ बैंक, स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया
सिंगापुर : DBS बैंक सिंगापुर, लिक्विड ग्रुप (गैर-बैंक वित्तीय संस्थान)

इकोसिस्टम के लिए गेम चेंजर साबित हुआ है। वित्तीय समावेशन और सबसे निचले स्तर तक आर्थिक लाभ की पहुँच सुनिश्चित करने में इसे तेज़ी से मान्यता मिल रही है और इस तरह ईज़ ऑफ़ लिविंग भी सुनिश्चित हो रही है। जिन क्षेत्रों में कुछ साल पहले तक स्थिर इंटरनेट सुविधा नहीं थी, वे भी आज UPI का लाभ उठा रहे हैं। देश भर में समृद्ध व्यवसायों से लेकर मामूली फ़ेरी वाले और किराना स्टोर तक UPI की मदद से भुगतान और लेन-देन कर रहे हैं।

JAM ट्रिनिटी, यानी जन-धन, आधार और मोबाइल ने UPI के साथ मिलकर भारत को डिजिटल भुगतान की दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ने में मदद की है। RBI ने मार्च, 2022 में फ़ीचर फोन के लिए UPI123Pay पेश किया, जिससे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में 400 करोड़ उपभोक्ताओं को जोड़े जाने की उम्मीद है। UPI Lite (PIN या इंटरनेट के बिना कम मूल्य का शीघ्र और आसान लेन-देन), क्रेडिट कार्ड को UPI से जोड़ने, IPO के लिए UPI ID से भुगतान का विकल्प देने जैसी सेवाओं, NPCI के दिशानिर्देशों के अनुसार दस देशों के प्रवासी भारतीयों (NRI) को अपने अंतरराष्ट्रीय मोबाइल नम्बर से UPI का उपयोग करने की अनुमति देने और भारत आने वाले सभी यात्रियों को मर्चेन्ट पेमेंट के लिए UPI के उपयोग के प्रस्ताव ने भारत के डिजिटल भुगतान तंत्र को वास्तव में समावेशी बना दिया है।

प्रधानमंत्री एक निष्पक्ष और समावेशी भविष्य के लिए डिजिटल प्रगति की क्षमता को केंद्रीय मानते हैं। इसलिए उनका प्रमुख बल यह सुनिश्चित करने पर रहा है कि UPI का लाभ केवल भारत

तक ही सीमित न हो, बल्कि अन्य देशों को भी इसका लाभ मिले। UPI-PayNow लिंकेज G20 की वित्तीय समावेशन प्राथमिकताओं के अनुरूप है, जिसमें तेज़, सस्ता और अधिक पारदर्शी सीमापार भुगतान शामिल है।

NIPL (NPCI इंटरनेशनल पेमेंट्स लिमिटेड) ने अन्य देशों में मर्चेंट इस्टेब्लिशमेंट में BHIM UPI QR की स्वीकृति के लिए अनेक पहल की हैं। इसे सिंगापुर (मार्च, 2020), भूटान (जुलाई, 2021) और संयुक्त अरब अमीरात और नेपाल (फरवरी, 2022) में स्वीकृति मिल चुकी है, यहाँ तक कि नेपाल UPI को अपने भुगतान मंच के रूप में तैनात करने वाला पहला विदेशी देश बना। NIPL ने उत्तर और दक्षिण-पूर्व एशिया के 10 देशों में UPI QR-आधारित भुगतान सक्षम करने के लिए सिंगापुर स्थित लिक्विड ग्रुप के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। NIPL ने यूरोप में व्यापारियों के प्वाइंट- ऑफ़-सेल (POS) सिस्टम को UPI से भुगतान स्वीकार

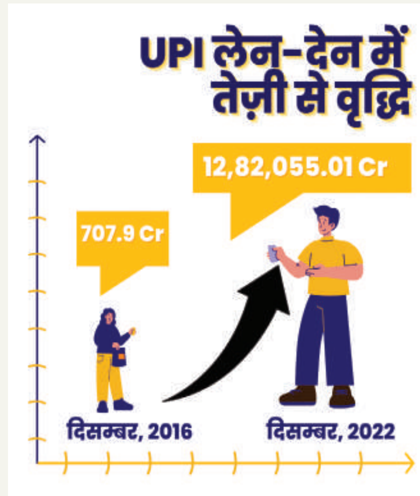

> "डिजिटलीकरण और वित्तीय समावेशन में भारत की प्रगति देश के बाहर तेज़ी से प्रसिद्ध हो रही है। भारत-सिंगापुर UPI-PayNow लिंक अन्य देशों की भुगतान प्रणालियों के साथ UPI को जोड़ने के लिए एक उपयोगी टेम्पलेट प्रदान करेगा, ताकि क्षेत्रीय और विश्व स्तर पर इस तरह की अधिक क्रॉस-बॉर्डर वित्तीय कनेक्टिविटी प्राप्त की जा सके।"
>
> **-पी. कुमारन**
> भारतीय उच्चायुक्त, सिंगापुर

करने में सक्षम बनाने के लिए यूरोपीय पेमेंट्स फेसिलिटेटर वर्ल्डलाइन के साथ भी साझेदारी की है। भारत लगभग 30 देशों के केंद्रीय बैंकों और भुगतान सेवा प्रदाताओं के साथ UPI अपनाए जाने के संदर्भ में बातचीत कर रहा है और फ्रांस, ओमान, यूके पहले ही समझौता-ज्ञापनों पर हस्ताक्षर कर चुके हैं।

किफ़ायती, सुलभ, सुविधाजनक, कुशल, सुरक्षित और संरक्षित। भारत के UPI ने दुनिया भर में ख़लबली मचाई है। ओपन स्टेक प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने तथा भुगतान और निपटान प्रणालियों के लिए एक अलग क़ानून जैसे प्रगतिशील सरकारी सुधारों से प्रेरित भारत के फिनटेक तंत्र पर उत्प्रेरक प्रभाव पड़ा है, जो दुनिया में सबसे तेज़ी से बढ़ते तंत्रों में से एक के रूप में उभरा है। ये सभी प्रधानमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व के साथ भारत के सर्वश्रेष्ठ-इन-क्लास डिजिटल पेमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर के वैश्वीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वह दिन दूर नहीं, जब UPI विश्व भर का मानक होगा।

भारत का
डिजिटल पेमेंट इन्फ्रास्ट्रक्चर

यूनाइटेड पेमेंट्स इंटरफ़ेस

किसी भी सहभागी बैंक/गैर-बैंक TPA के एकल मोबाइल ऐप में कई बैंक खातों को मर्ज करता है

भारत इंटरफेस फ़ॉर मनी

UPI का उपयोग करके आसान और त्वरित भुगतान लेन-देन के लिए एक मोबाइल ऐप

इमीडिएट पेमेंट सर्विस

P2P, P2A और P2M लेन-देन को संसाधित करने में सक्षम रीयल-टाइम इंटरबैंक इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफ़र सेवा

आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम

प्वाइंट ऑफ सेल (माइक्रोATM) पर ऑनलाइन इंटरऑपरेबल वित्तीय समावेशन लेन-देन को सक्षम बनाता है

नेशनल ऑटोमेटेड क्लीयरिंग हाउस

बैंकों, वित्तीय संस्थानों, निगमों और सरकार के लिए वेब-आधारित केंद्रीकृत प्रणाली, जो इंटरबैंक हाई-वॉल्यूम इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन की सुविधा प्रदान करती है

रुपे

स्वदेशी रूप से विकसित भुगतान प्रणाली, जो भारत में बैंकों द्वारा डेबिट/क्रेडिट/प्रीपेड कार्ड जारी करने में सहायता करती है

नेशनल फ़ाइनेंशियल स्विच

भारत में ATMs का सबसे बड़ा इंटरऑपरेबल नेटवर्क, जो सुविधाजनक बैंकिंग प्रदान करता है

भारत बिल पेमेंट सिस्टम

इंटरऑपरेबल और सुलभ बिल भुगतान सेवा प्रदान करने वाली एक एकीकृत बिल भुगतान प्रणाली

नेशनल इलेक्ट्रॉनिक टोल कलेक्शन (FASTag)

RFID तकनीक का उपयोग कर टोल भुगतान के लिए एक आसान और सुविधाजनक डिजिटल भुगतान प्रणाली

ई-रूपी

प्रीपेड QR कोड/SMS-आधारित इलेक्ट्रॉनिक वाउचर के रूप में जारी व्यक्ति और उद्देश्य-विशिष्ट डिजिटल भुगतान समाधान

***99#**

USSD-आधारित डिजिटल भुगतान और बैंकिंग सेवा जो *99# डायल करके प्राप्त की जाती है

पी. कुमारन

भारतीय उच्चायुक्त, सिंगापुर

UPI-PayNow के साथ क्रॉस-बॉर्डर वित्तीय समावेशन

भारत और सिंगापुर कई सदियों से सांस्कृतिक, व्यापरिक और लोगों के बीच परस्पर सम्बन्धों से जुड़े हुए हैं। आज हम एक जीवंत, बहु-आयामी सम्बन्ध के साथ रणनीतिक भागीदार हैं, जो राजनीति, अर्थशास्त्र और सुरक्षा के कई क्षेत्रों में विस्तारित हो गया है। पिछले कुछ वर्षों में फ़िनटेक, डिजिटल कनेक्टिविटी, हरित अर्थव्यवस्था, कौशल विकास और स्मार्ट शहरों जैसे नए और उभरते क्षेत्रों में ये सम्बन्ध नई ऊँचाइयाँ छू चुके हैं।

आम आदमी के लाभ के लिए इस तरह के द्विपक्षीय सहयोग का एक हालिया उदाहरण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 26 फरवरी, 2023 को अपने 'मन की बात' सम्बोधन में उजागर किया गया था। भारत के UPI और सिंगापुर के PayNow को अब एक साथ जोड़ दिया गया है। सिंगापुर के प्रधानमंत्री, ली सीन लूंग के साथ हमारे प्रधानमंत्री दो प्रणालियों को जोड़ने के लिए इस पथप्रदर्शक पहल के व्यावसायिक शुभारम्भ के साक्षी बने।

पहले चरण में हम समझते हैं कि यह सुविधा पायलट आधार पर कार्यक्रम में शामिल व्यक्तियों के लिए उपलब्ध होगी। इसके बाद इस महीने के अंत तक अधिक उपभोक्ताओं और अधिक यूज़-केसेस को शामिल करने के लिए इसका विस्तार किया जाएगा, ताकि आबादी के बड़े हिस्से को कवर किया जा सके। एक बार पूरी तरह से लागू हो जाने के बाद यह दोनों तरफ बैंक खातों या ई-वॉलेट के बीच सिंगापुर से भारत और भारत से सिंगापुर, कम लागत और रियल-टाइम में पैसे के हस्तांतरण की अनुमति देगा। जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा, इससे सिंगापुर में भारतीय प्रवासियों, विशेष रूप से प्रवासी श्रमिकों, छात्रों और पर्यटकों को भी बहुत मदद मिलेगी और आम आदमी को डिजिटलीकरण और फिनटेक का लाभ मिलेगा।

डिजिटलीकरण और वित्तीय समावेशन में भारत की प्रगति देश के बाहर तेज़ी से प्रसिद्ध हो रही है। भारत-सिंगापुर UPI-PayNow लिंक अन्य देशों की भुगतान प्रणालियों के साथ UPI को जोड़ने के लिए एक उपयोगी टेम्पलेट प्रदान करेगा, ताकि क्षेत्रीय और विश्व स्तर पर इस तरह की अधिक क्रॉस-बॉर्डर वित्तीय कनेक्टिविटी प्राप्त की जा सके।

UPI-PayNow के फायदों के बारे में पी. कुमारन के विचार जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

यूपीआई की वैश्विक सेवाक्षमता की परिकल्पना

दिलीप अस्बे
प्रबंध निदेशक और सीईओ
भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम
(एनपीसीआई)

भारत के यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI) और सिंगापुर के 'पे-नाउ' के साथ लिंकेज की घोषणा की गई है। यह न केवल दोनों देशों के लिए, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक देश से अन्य देशों में लेन-देन के सन्दर्भ में एक ऐतिहासिक क्षण है। UPI-Pay-Now लिंकेज डिजिटल कनेक्टिविटी और इंटरऑपरेटिबिलिटी को बढ़ावा देगा। इससे एक देश से दूसरे देश में लोगों द्वारा धन का शीघ्र, निर्बाध, सुरक्षित और तत्काल लेन-देन सम्भव हो सकेगा, साथ ही देश की सीमा के बाहर भुगतान के शुल्क में कमी लाने में भी सहायता मिलेगी।

यह लिंकेज देश की सीमा के बाहर भुगतान के लिए एक इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास में महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह शीघ्रतापूर्ण, किफायती और अधिक पारदर्शी सीमा पार भुगतान को लेकर G20 की वित्तीय समावेशन प्राथमिकताओं के अनुरूप है। इसके अनेक लाभ हैं। पहला लाभ इसकी तीव्र गति है। कुछ सेकंड में रीयल-टाइम भुगतान प्रणाली का इस्तेमाल करके धन को देश की सीमा के बाहर भेज दिया जाता है। यह उपयोगकर्ता द्वारा अपने देश के भीतर धन स्थानान्तरित करने जैसा ही अनुभव होता है। सुरक्षित भुगतान की सुविधा मिलना इसका दूसरा लाभ है। लाभार्थी खाते का सत्यापन होना इच्छित प्राप्तकर्ता को भुगतान सुनिश्चित करता है। प्राप्तकर्ता को धन भेजने के लिए प्रेषक को अपना बैंक विवरण साझा करने की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

इस्तेमाल में आसानी होना इसकी तीसरी सुविधा है। भारतीय उपभोक्ता अब UPI ID के उपयोग से सिंगापुर से सीधे पैसा प्राप्त कर सकते हैं, साथ ही भारतीय उपभोक्ता प्राप्तकर्ता के मोबाइल नम्बर/वर्चुअल पेमेंट एड्रेस (वीपीए) का उपयोग करके सिंगापुर को पैसा भेज सकते हैं। चौथी सुविधा इसका किफायती होना है। सिंगापुर से भारत में सीमा पार धनांतरण की औसत लागत बाज़ार में प्रचलित लागत की तुलना में काफ़ी कम होगी।

भारत में 2016 से UPI की शुरुआत हुई थी। उसके बाद देश के डिजिटल परिदृश्य में एक व्यापक बदलाव आया है। UPI भारत में सबसे लोकप्रिय डिजिटल भुगतान प्रणाली बन गया है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि दिसम्बर, 2016 में UPI लेन-देन की कुल संख्या 0.1 बिलियन थी, जो फरवरी, 2023 में बढ़कर 75 बिलियन हो गई। UPI लेन-देन की कुल धनराशि भी दिसम्बर, 2016 के 1.9 बिलियन रुपये से बढ़कर फरवरी, 2023 में 12.36 ट्रिलियन रुपये हो गई।

हाल ही में उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, भारत को विदेशों में काम करने वाले प्रवासियों से 100 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक धन प्राप्त हुआ। भारत विश्व स्तर पर अन्य देशों से धन प्राप्त करने के मामले में लगातार पहले स्थान पर बना हुआ है। एक आशाजनक भविष्य के साथ यहाँ से अन्य देशों में भेजी जाने वाली धनराशि में निरंतर वृद्धि देखी जा रही है। यह स्पेस विभिन्न हिस्सों में है और डेटेड इंफ्रास्ट्रक्चर इसका आधार बनता है। तत्काल धन प्राप्ति और धन को बाहर भेजने में सक्षम करने के लिए UPI को सशक्त करना, देश के नागरिकों के साथ-साथ दुनिया के नागरिकों के लिए भी एक महत्त्वपूर्ण सेवा है। वर्तमान में ये लेन-देन मनी ट्रांसफर ऑपरेटरों (एमटीओ), बैंक बायलेटरल और स्विफ्ट के माध्यम से किए जाते हैं, जो धन प्राप्त करने का सबसे किफ़ायती और मनोनुकूल माध्यम नहीं है।

सितम्बर, 2020 की रेमिटेंस प्राइस वर्ल्डवाइड रिपोर्ट के आधार पर, रेमिटेंस की वैश्विक औसत लागत 2020 की तीसरी तिमाही में 6.75 प्रतिशत थी। दोनों देशों में उपलब्ध भुगतान प्रणालियों को जोड़कर तत्काल सीमा पार धन भेजने में धन की प्राप्ति और प्रेषण की लागत में काफी कमी आएगी। यह G20 एजेंडे के तहत एक घोषित उद्देश्य भी है।

भारत सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक ने NPCI के भुगतान को वैश्विक स्तर पर ले जाने के लिए अनेक पहल की हैं। इस पहल को आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा जुलाई, 2022 में इंडिया स्टैक ग्लोबल वेबसाइट www.indiastack.global लॉन्च की गई थी। इस पहल से भारत सॉफ्टवेयर निर्यात करने में सक्षम बनेगा और भारत के फिनटेक को विदेशों में अपने कारोबार को सक्षम बनाने में भी मदद मिलेगी। व्यक्ति द्वारा कारोबारी को (पी2एम) भुगतान के लिए भीम UPI क्यूआर लम्बे समय से कई देशों में उपलब्ध है, लेकिन सिंगापुर की घरेलू भुगतान प्रणाली के साथ सीधा लिंकेज होना एक मील का पत्थर है। यह दो देशों के बीच पैसे के लेन-देन के तरीके को बदलने जा रहा है। यह तत्क्षण, किफ़ायती, शुल्क की पारदर्शिता जैसे गुणों से परिपूर्ण है और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह अधिकांश लोगों तक पहुँच प्रदान करता है। इस प्रकार दोनों देशों के डिजिटल बैंकिंग ग्राहकों ने सीमा पार धन भेजने के लिए G20 द्वारा निर्धारित सभी उद्देश्यों को भली-भाँति स्वीकार किया।

भारत में UPI की सफलता के कारण, कई देशों ने इसे भुगतान के एक विकल्प के रूप में रखने के अलावा, इंटरफेस को अपनी भुगतान प्रणाली के रूप में इस्तेमाल करने का मंसूबा दर्शाया है। UPI के इस्तेमाल से देशों को एक आत्मनिर्भर, नवीनतम और किफ़ायती डिजिटल भुगतान इंफ्रास्ट्रक्चर प्राप्त करने में सक्षम बनाया जा सकता है। इससे व्यापारिक भुगतान वृद्धि को प्रतिबंधित करने वाले विदेशी मानकों पर निर्भरता के बिना आर्थिक विकास और वित्तीय समावेशन में सहायता मिल सकती है। लेन-देन में पारदर्शिता से कर प्रणाली का बेहतर अनुपालन हो सकता है। UPI जैसी एक मज़बूत प्रणाली रोज़गार सृजन और देशों की अर्थव्यवस्थाओं के आधुनिकीकरण के लिए फिनटेक इन्क्यूबेशन के सम्बल के रूप में उभर सकती है। सेंट्रल बैंक के आवश्यक नियमों के साथ UPI जैसा प्लेटफ़ॉर्म देश में भुगतान परिदृश्य को सही मायने में बदल सकता है।

भारत की UPI और प्रधानमंत्री की डिजिटल इंडिया पहल ने पूरी दुनिया के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है कि कैसे आर्थिक विकास को गति देने, सरकारी सेवाओं तक पहुँच में सुधार करने और नागरिकों को सशक्त बनाने के लिए डिजिटल तकनीकों का लाभ उठाकर महत्त्वपूर्ण बदलाव लाए जा सकते हैं।

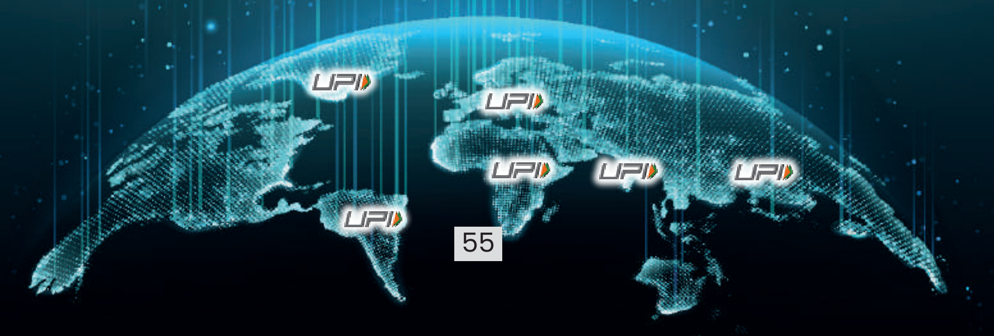

त्रिवेणी कुम्भ महोत्सव

बंगाल में कुम्भ की गौरवशाली परम्परा का पुनर्स्थापन

प्रधानमंत्री ने हमेशा देश के युवाओं से भारत की सांस्कृतिक विरासत को पुनः जीवित करने का आह्वान किया है और उनके 'मन की बात' में वर्णित त्रिवेणी कुम्भ महोत्सव इसका एक ताज़ा उदाहरण है। त्रिवेणी कुम्भ महोत्सव के प्रयासों से 700 वर्षों के बाद फिर से जीवंत हुआ कुम्भ महास्नान, गंगा आरती, रुद्राभिषेक और यज्ञों का यह तीन-दिवसीय मेला पश्चिम बंगाल के हुगली ज़िले में आयोजित किया गया।

मेले में आठ लाख से अधिक श्रद्धालु शामिल हुए। इस बार उत्सव में विभिन्न आश्रम, मठ और अखाड़े भी शामिल किए गए थे और कीर्तन, बाउल, गौडिया नृत्य, श्री-खोल, पोटेर गान और छऊ-नृत्य जैसी असंख्य बंगाली परम्पराएँ शाम के कार्यक्रमों का मुख्य आकर्षण थीं।

हिंदू धर्म में, कुंभ मेलों को एक प्रमुख तीर्थ और त्योहार माना जाता है और त्रिवेणी श्रद्धा के समृद्ध इतिहास वाली तीन पौराणिक नदियों का संगम है। पश्चिम बंगाल में त्रिवेणी को सदियों से एक पवित्र स्थान के रूप में जाना जाता है, जिसका उल्लेख विभिन्न मंगलकाव्य, वैष्णव साहित्य, शाक्त साहित्य और अन्य बांग्ला साहित्यिक कार्यों में मिलता है। त्रिवेणी में कई गंगा घाट, शिव मंदिर और टेराकोटा वास्तुकला से सजाए गए प्राचीन भवन देखने को मिलते हैं। विभिन्न ऐतिहासिक दस्तावेज़ बताते हैं कि यह क्षेत्र कभी शिक्षा और संस्कृति का केंद्र था। कई संत माघ संक्रांति पर कुंभ स्नान के लिए इसे एक पवित्र स्थान मानते हैं।

सामान्य ज्ञान

त्रिवेणी कुम्भ महोत्सव को शायद इसकी उत्पत्ति के दौरान कुम्भ मेला नहीं कहा जाता था, लेकिन एक कारण है कि आज इसे कुम्भ मेला कहा जाता है। ज्योतिषीय रूप से माघ के महीने के आखिरी दिन के दौरान सूर्य मकर राशि से कुम्भ राशि में स्थानांतरित होता है और जब ऐसा होता है तो कुम्भ संक्रांति होती है। यह संक्रांति पहले भी देशभर में प्रसिद्ध थी और आज भी है, जिसमें लोग हज़ारों की संख्या में पवित्र नदी में स्नान करते हैं।

कंचन बैनर्जी
लेखक व प्रबंध निदेशक, बॉस्टन सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फ़ॉर हेल्थ एंड ह्यूमन डेवलपमेंट

त्रिवेणी कुम्भ महोत्सव – सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिकता का प्रतीक

पश्चिम बंगाल में हुगली ज़िले में हाल ही में 'त्रिवेणी कुम्भ महोत्सव' का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री द्वारा अपने 'मन की बात' में इस बात का ज़िक्र करने के बाद से कई लोग इस मेले के इतिहास के बारे में जानना चाहते हैं। हाल ही में प्रकाशित मेरी पुस्तक 'द क्रैश ऑफ़ अ सिविलाइज़ेशन' के शोध के दौरान मैंने पाया कि उपनिवेशवादियों और अन्य आक्रमणकारियों द्वारा हमारे इतिहास का अधिकांश भाग नष्ट कर दिया गया है। जब मैं बंगाल आया, तो 1300 के पूर्वार्द्ध से 1500 ई. तक इस स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त करना मुश्किल था। मैंने पाया कि 200 साल का इतिहास करीब-करीब अनुपलब्ध है। आगे शोध करने के क्रम में मैंने पाया कि त्रिवेणी, बांसबेरिया और सप्तग्राम का वृहद् इतिहास रहा है।

गंगा, सरस्वती और यमुना के त्रिवेणी संगम को दक्षिण प्रयाग भी कहा जाता था। ऐसा क्यों कहा जाता था, इसकी खोज करते हुए हमने पाया कि पौष संक्रांति और माघी संक्रांति के दौरान उस क्षेत्र में बड़े मेले का आयोजन किया जाता था। पौष संक्रांति बंगाल की खाड़ी के पास गंगा सागर मेले में भव्य रूप से मनाई जाती है। वहीं माघी संक्रांति त्रिवेणी क्षेत्र का एक बड़ा आयोजन होता था, जिसे अब कुम्भ मेला कहा जाता है।

हमने यह भी पाया कि वर्ष 1298 के आस-पास, तुर्की-सैनिकों द्वारा उस क्षेत्र पर आक्रमण किया गया था। उन्होंने व्यापार केंद्र, शैक्षिक केंद्र और मन्दिरों से समृद्ध नगर सप्तग्राम पर कब्ज़ा करने की कोशिश की थी। स्थानीय राजाओं ने उनका बहादुरी से मुकाबला किया, लेकिन तुर्की सैनिकों ने 1313-15 के आस-पास फिर आक्रमण करके इस क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया और मन्दिरों को नष्ट कर दिया। इसके बाद यह मेला लगभग 700 वर्षों तक स्थायी रूप से रुका रहा। अब हमने पिछले साल 2022 में त्रिवेणी में इस कुम्भ स्नान मेले के महोत्सव की शुरुआत की। इसमें लोगों ने ज़बरदस्त रुचि दिखाई। मेला असाधारण रूप से आयोजित किया गया था और तीन दिनों की अवधि में लाखों लोग आए थे। ऐतिहासिक रूप से कहा जाए तो यह क्षेत्र बंगाल के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है और हम उसकी पहचान को फिर से हासिल करना चाहते हैं।

हमने कुम्भ मेले को पुनर्जीवित किया है ताकि एक तरफ़ हम अपने अतीत को व अपनी परम्परा को जान सकें और दूसरी तरफ़ स्थानीय क्षेत्र में बदलाव ला सकें, जो पहले कभी वाराणसी जैसा समृद्ध शहर हुआ करता था। हम चाहते हैं कि यह शहर फिर से समृद्ध हो। हम आध्यात्मिक विकास और स्थानीय आर्थिक विकास, दोनों के संदर्भ में त्रिवेणी को एक हेरिटेज सिटी के रूप में देखना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि दुनिया भर से लोग आएँ और हमारी परम्परा को देखें और हमारे इन प्रयासों को प्रोत्साहित करें। भारत की शक्ति आध्यात्मिकता में निहित है और यही हमारी विरासत और सभ्यता का मूल है।

जब हमारे प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में इस मेले का ज़िक्र किया तो मैं बहुत ख़ुश हुआ। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सरकार के प्रयासों ने हमारी विरासत, परम्परा, संस्कृति और इतिहास को पुनर्जीवित किया है। प्रधानमंत्री कई मौक़ों पर विभिन्न परम्पराओं, कलाओं और संस्कृतियों के बारे में बात करते हैं और हमारी भारतीय विरासत के कुछ अज्ञात हिस्सों को सामने लाते हैं। प्रधानमंत्री का एक विज़न है कि हमें न केवल अपने आर्थिक विकास के लिए, बल्कि अपनी विरासत पर भी गर्व करना चाहिए, जिसमें बहुत कुछ छिपा हुआ है, जो विलुप्त या नष्ट हो गया है। मुझे लगता है कि मोदीजी ने हमारे देश के इतिहास और विरासत को लोगों के दिमाग में वापस लाने के लिए एक बहुत ही असाधारण पहल की है और हम ऐसा ही करने की कोशिश कर रहे हैं। बंगाल में मंचन कला के अनेक रूप हैं, जो धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं और हम उन्हें सबसे आगे लाकर जीवंत रखने का प्रयास कर रहे हैं। बंगाल का एक बहुत ही विशेष नृत्य – गौरी नृत्य लुप्त हो रहा है। छऊ नृत्य और श्री-खोल वाद्ययंत्र, जिसे श्री गौरांग महाप्रभु के अलावा अब तक किसी और ने नहीं बजाया था, ये सभी ऐसी ही परम्पराएँ हैं, जिन्हें महोत्सव के दौरान हमने हर शाम प्रदर्शित किया और लोगों ने पसन्द भी किया।

मैंने पहली बार इस मेले को देखा। मेले में कई बार आनंददायक पलों का साक्षी बना। शिवलिंग को पानी में विसर्जित करना, साधुओं द्वारा जल में डुबकी लगाना, ये सभी ऐसे अद्भुत दृश्य थे, जिन्हें त्रिवेणी में सैकड़ों वर्षों से नहीं देखा गया था। यह देखना आश्चर्यजनक था कि नई पीढ़ी भारत की विरासत को आगे ले जाने के लिए किस तरह तैयार है। भारत के लोग अपनी सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिकता के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

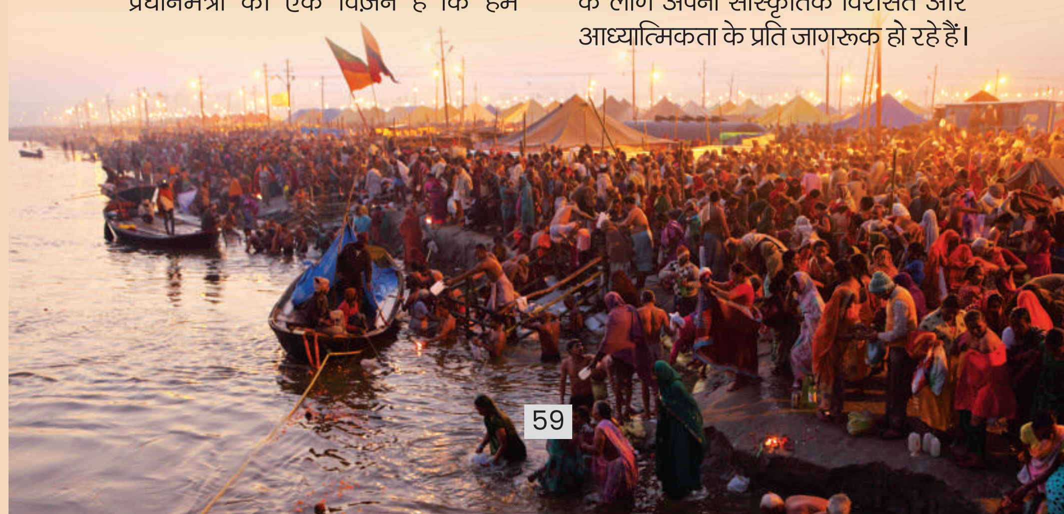

स्वच्छ भारत अभियान

जनभागीदारी से सफलता का मार्ग प्रशस्त करता

> **जन भागीदारी ने देश के विकास में एक नई ऊर्जा प्रदान की है और स्वच्छ भारत अभियान इसका एक उदाहरण है।**

स्वच्छ भारत अभियान, स्वच्छता और स्वच्छता के मुद्दे को सम्बोधित करने के लिए 2 अक्टूबर, 2014 को प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किया गया एक राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान है। अभियान का उद्देश्य भारत को खुले में शौच मुक्त बनाना, हर घर में शौचालय बनाना और सभी नागरिकों के लिए स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण को बढ़ावा देना है।

स्वच्छ भारत अभियान के शुरुआती समय से ही जन भागीदारी इसका एक महत्त्वपूर्ण पहलू रही है। इस अभियान ने ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों के नागरिकों को शामिल करने पर ध्यान केंद्रित किया है, ताकि स्वच्छता का सन्देश दिया जा सके और एक स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण की दिशा में व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा दिया जा सके। प्रधानमंत्री ने अपने हालिया 'मन की बात' में दुल्हेड़ी, हरियाणा और केंद्रपाड़ा, ओडिशा से जनभागीदारी की दो अलग-अलग कहानियों पर प्रकाश डाला।

जन भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए की गईं कुछ पहलें

स्वच्छ भारत प्रतिज्ञा नागरिकों द्वारा अपने आस-पास स्वच्छता और स्वच्छता की दिशा में योगदान करने की प्रतिबद्धता है। यह नागरिकों के बीच अपने पर्यावरण के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना पैदा करने में सफल रही और इसने देश की स्वच्छता और सुधार में योगदान दिया है।

स्वच्छता पखवाड़ा एक 15 दिवसीय अभियान है, जो वर्ष में दो बार आयोजित किया जाता है। इसका उद्देश्य नागरिकों के बीच जागरूकता पैदा करना और एक स्वच्छ और स्वस्थ भारत बनाने के लिए सार्वजनिक भागीदारी जुटाना है। इसमें देश भर में आयोजित स्वच्छता अभियान और कार्यशालाओं जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।

स्वच्छता ऐप, एक मोबाइल एप्लिकेशन, जो नागरिकों को स्वच्छता से सम्बन्धित मुद्दों पर प्रतिक्रिया देने और शिकायत दर्ज़ करने में मदद करता है। यह एप्लीकेशन स्थानीय अधिकारियों द्वारा त्वरित कार्रवाई की सुविधा प्रदान करने में सहायक रही है और स्वच्छता के प्रति नागरिकों में जवाबदेही की भावना पैदा करने में मदद करती है।

स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों की भागीदारी ने युवा पीढ़ी के बीच साफ़-सफ़ाई और स्वच्छता की आदत को बढ़ावा दिया है। कई स्कूलों ने अपने पाठ्यक्रम में स्वच्छता को शामिल किया है और स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण अभियान, अपशिष्ट प्रबंधन कार्यशालाओं जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया है।

स्वच्छ सर्वेक्षण दुनिया का सबसे बड़ा शहरी स्वच्छता सर्वेक्षण है। यह देश के शहरों को स्वच्छ बनाने के लिए कस्बों और शहरों के बीच प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देने में सहायक रहा है। इस सर्वेक्षण ने समाज के सभी वर्गों में एकजुट हो कर अपने आस-पास की जगहों को और बेहतर बनाने के महत्त्व के बारे में जागरूकता पैदा की है।

जनभागीदारी, स्वच्छ भारत अभियान का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। इस अभियान ने प्रौद्योगिकी, स्कूलों, शैक्षणिक संस्थानों और नागरिकों के समर्पण का लाभ उठाते हुए समुदायों में स्वच्छता की महत्ता को बढ़ावा दिया है। स्वच्छ भारत अभियान ने दिखाया है कि सामूहिक प्रयास और जनभागीदारी से हम जल्द ही स्वच्छ और स्वस्थ भारत के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

युवा स्वच्छता एवं जनसेवा समिति : स्वच्छ भारत अभियान का नेतृत्व कर रहे युवा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 2 अक्टूबर, 2014 को शुरू किया गया स्वच्छ भारत अभियान आज देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणा बन गया है। हाल ही में अपने 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने हरियाणा में भिवानी ज़िले के दुल्हेड़ी गाँव की मौलिक कहानी साझा की, जहाँ 'युवा स्वच्छता एवं जनसेवा समिति' के बैनर तले युवाओं की एक टीम ने अपने गाँव और आस-पास के शहरी क्षेत्रों की सफ़ाई की ज़िम्मेदारी ली है।

*दूरदर्शन की टीम ने युवा स्वच्छता एवं जनसेवा समिति के अध्यक्ष **श्री पवन कुमार सेनी** से बात की।*

"हम पिछले तीन सालों से स्वच्छता के लिए काम कर रहे हैं। हम न केवल अपने गाँव की सफ़ाई पर ध्यान देते हैं, बल्कि हम ज़िला और राज्य स्तर पर स्वच्छता अभियान भी चलाते हैं। हाल ही में हमने भिवानी और गुरुग्राम में व्यापक सफाई अभियान चलाया। 'मन की बात' जैसे कार्यक्रम में प्रधानमंत्री द्वारा हमारे कार्यों का उल्लेख करने से हमें प्रेरणा मिली है। हमारे काम की तारीफ़ करने और हमारे छोटे से गाँव को राष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाने के लिए हम उनको धन्यवाद देते हैं। उनसे मिली इस प्रशंसा के बाद हम अपने अभियान को और अधिक जोश से आगे ले जाने के लिए प्रेरित हैं।"

दूरदर्शन से बात करते हुए गाँव के शिक्षक और युवा स्वच्छता एवं जनसेवा समिति की टीम के प्रेरक **मास्टर बंसीलाल** ने समिति की स्थापना और कार्य के बारे में बात की, "मेरी हमेशा से सामाजिक कार्यों में रुचि रही है। यही मैं अपने विद्यार्थियों को भी सिखाता हूँ। जब श्री पवन सेनी ने मेरा काम देखा तो उन्होंने सलाह के लिए मुझसे सम्पर्क किया। मैंने उनसे कहा कि अगर वे ठान लें तो वे भी सैकड़ों लोगों की टीम बना सकते हैं और समाज के लिए बड़ा काम कर सकते हैं। इसके तुरंत बाद उन्होंने स्वच्छता की दिशा में काम करना शुरू किया और अपनी टीम बनाई। आज राष्ट्रीय स्तर पर उनके काम की तारीफ़ हो रही है। युवा स्वच्छता एवं जनसेवा समिति का समर्पण ऐसा है कि वे समय की परवाह किए बिना स्वच्छता के लिए काम करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। मेरे लिए यह बेहद खुशी की बात है कि आज उनके समर्पण के कारण मेरे गाँव को खुद प्रधानमंत्री राष्ट्रीय मंच पर पहचान दे रहे हैं।"

श्री घनश्याम सराफ, विधायक (भिवानी) ने भी समिति के युवाओं द्वारा किए गए नि:स्वार्थ कार्यों को देश के सामने ला कर भारत के युवाओं को प्रेरित करने के लिए प्रधानमंत्री का धन्यवाद किया। समिति के सदस्य श्री नाथूराम जांगड़ा और श्री दीपक ने प्रधानमंत्री द्वारा मिली प्रेरणा और राष्ट्रीय मंच पर दी गई पहचान के लिए उनका धन्यवाद किया।

हरियाणा के दुल्हेड़ी गाँव के युवाओं द्वारा की गई स्वच्छता पहल के बारे में जानने के लिए QR कोड स्कैन करें

वेस्ट टू वेल्थ : स्वच्छ भारत अभियान की सफलता को आगे बढ़ा रहे स्वयं सहायता समूह

स्वच्छ भारत अभियान के शुरुआती दिनों से ही स्वयं सहायता समूहों (SHGs) ने इसकी सफलता में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वयं सहायता समूहों ने न केवल स्वच्छता और साफ़-सफ़ाई पर जागरूकता को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया है, बल्कि कचरे को धन में बदलने के अभिनव तरीकों को भी लोकप्रिय बनाया है। हाल ही में अपने 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने ओडिशा के केंद्रपाड़ा ज़िले की **कमला मोहराना** द्वारा किए गए सराहनीय कार्य का उल्लेख किया।

कमला मोहराना एक स्वयं सहायता समूह चलाती हैं, जहाँ महिलाएँ दूध के पाउच और पैकिंग सामग्री से निकलने वाले बेकार प्लास्टिक का उपयोग कर उनसे टोकरी, मोबाइल स्टैंड आदि जैसे सुन्दर उत्पाद तैयार करती हैं। यह न केवल महिलाओं के लिए आय का एक अच्छा स्रोत बन गया है, बल्कि यह उनके इलाके में स्वच्छता सुनिश्चित करने में भी मदद कर रहा है।

कमला मोहराना की पहल के बारे में और जानने के लिए दूरदर्शन की टीम ने उनसे बात की।

"जब मैंने स्वच्छ भारत अभियान को बढ़ावा देने के लिए यह पहल शुरू की तो मेरे इलाके के लोगों ने मेरा मज़ाक उड़ाया। मेरा स्पष्ट विज़न है दैनिक कचरे को दैनिक उपयोग की वस्तुओं में परिवर्तित करना। इस आंदोलन में मेरे साथ कई महिलाएँ शामिल हुईं। हमने उत्पादों को तैयार करना शुरू किया और उन उत्पादों को बेचने के लिए कई मेलों और प्रदर्शनियों में भाग लिया। हमारा उद्देश्य स्वच्छता पर जागरूकता पैदा करना और प्लास्टिक मुक्त वातावरण बनाना है।"

कमला मोहराना ने प्रधानमंत्री द्वारा अपने काम का उल्लेख किए जाने के बारे में कहा, "मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि एक दिन खुद प्रधानमंत्री मेरे काम की तारीफ़ करेंगे। जब मैंने इसे सुना तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। आज मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है कि मैंने स्वच्छ भारत अभियान को अपने काम में शामिल किया है। जैसे ही 'मन की बात' का एपिसोड प्रसारित हुआ, बड़ी संख्या में लोग मुझे बधाई देने पहुँचे। मुझे बहुत खुशी हुई।"

कमला मोहराना की कहानी स्वच्छ भारत अभियान पर स्वयं सहायता समूहों के सकारात्मक प्रभाव का एक आदर्श उदाहरण है। कचरे को उत्पाद में बदल कर वे महिलाओं को आय उत्पन्न करने और आत्मनिर्भर भारत का हिस्सा बनाने के साथ एक स्वच्छ भारत का निर्माण करने में भी योगदान दे रही हैं। ऐसे समर्पित नागरिकों के साथ स्वच्छ भारत का सपना शीघ्र ही साकार होगा।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Sulabh International Social Service Organisation + Follow
1,118 followers
2w •

Hon'ble Dr. Bindeshwar Pathak founder, Sulabh Sanitation and Human Rights Movement, was the Chief Guest at the Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi's 98th 'Maan ki Baat'. Organised by Blitz India, his heart-to-heart reach out to the citizenry is a popular programme that's broadcast over All India Radio, DD News and DD National on the last Sunday of every month. In the episode today, on the occasion of the upcoming Holi festival, the Hon'ble PM said that we all wowed to celebrate the festivals with a stress on 'vocal for local', among the host of issues that he shared his views on.

#maankibaat

K.Annamalai
@annamalai_k

Our Hon PM today congratulated Karagattam dancer V. Durga Devi avl of Salem for winning the Ustad Bismillah Khan Yuva Puraskar Award- an award to identify and encourage outstanding young talents in performing arts. (3/3)

Kendrapara District - କେନ୍ଦ୍ରାପଡ଼ା ଜିଲ୍ଲା
@KendraparaIN

Thanapati SHG of Gulnagar GP in #Kendrapara district.
'Waste to Wealth' is also an important dimension of the Swachh Bharat Abhiyan. Kamala Moharana from Our #KendrapadaDistrict of Odisha, runs a self-help group.
PM @narendramodi during #MannKiBaat
କେନ୍ଦ୍ରାପଡ଼ା ଜିଲ୍ଲା #Kendrapada

Indian Diplomacy
@IndianDiplomacy
India government organization

In #MannKiBaat today, PM @narendramodi talked about the recently launched real time payment linkage between UPI of #BemisaalBharat and PayNow of Singapore.

Singapore is the 1st country with which cross border P2P payment facility has been launched.

cutt.ly/433cB0r

Ashwini Vaishnaw
@AshwiniVaishnaw

Over **10,00,00,000** tele-consultations! 👏👏👏
on e-Sanjeevani app.

#MannKiBaat

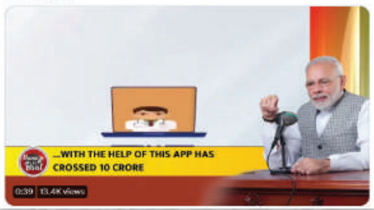

Dr. S. Jaishankar @DrSJaishankar · Feb 26
India government official

PM also highlighted the role played by Shri Kanchan Banerjee, who lives in America, in a campaign related to the preservation of heritage

PMO India @PMOIndia · Feb 26
India government organization
Protecting the cultural heritage of India. #MannKiBaat

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

My heart was filled with pride as Adarniya PM Shri @narendramodi ji in his #MannKiBaat program referred to a popular Assamese lullaby sung by Shri Dinesh Gowala. Grateful for recognising our local talent.

Congratulations Shri Gowala.

2:46 PM · Feb 26, 2023 · **26.3K** Views

Smriti Z Irani
@smritiirani

ଓଡ଼ିଶାର କେନ୍ଦ୍ରାପଡ଼ା ଜିଲ୍ଲାର ଭରଣୀ କମଳା ମହାରଣା ଏକ ସ୍ୱୟଂ ସହାୟକ ଗୋଷ୍ଠୀ ଚଲାନ୍ତି । ସେ ଅଦରକାରୀ ବସ୍ତୁ ଗୁଡିକର ପୁନଃ ବ୍ୟବହାର କରି #WasteToWealth ମଡେଲ ତିଆରି କରିପାରିଛନ୍ତି ।

#MannKiBaat ରେ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ @narendramodi ଙ୍କ ଦ୍ୱାରା କମଳାଙ୍କ ଉପରେ ହୋଇଥିବା ଚର୍ଚ୍ଚା ଅନ୍ୟ ମହିଳାଙ୍କୁ ପ୍ରେରିତ କରିବ ।
Translate Tweet

5:15 PM · Feb 26, 2023 · **22.8K** Views

Indra Hang Subba
@IndraHangSubba1

I am delighted to see Dr Madan Mani Dhakal from my parliamentary constituency #Sikkim featured today in 98th edition of #MannKiBaat. His contribution have largely benefited the people of our state. My deepest gratitude to Hon'ble PM @narendramodi ji.

4:44 PM · Feb 26, 2023 · **254** Views

HEALTH OF SIKKIM
4 h ·

Dr. Madan Mani Dhakal Joint Director Health Service interacts with Hon'ble Prime Minster in "Maan Ki Baat with the Nation" regarding esanjeevani a web based Tele Consultation service running successfully with 17200 plus tele consultation till date in Sikkim through our teleconsultation Hub and Spokes.

YOUTUBE.COM
PM Modi's Mann Ki Baat with the Nation, February 2023
Prime Minister Narendra Modi's Mann Ki Baat with the Nation, February 2023Su...

Elets eHealth + Follow
5,387 followers
2w •

Prime Minister #NarendraModi claimed that initiatives like the #eSanjeevani programme had ensured access to medical care for citizens living in remote parts of the nation in the 98th episode of his regular radio speech #MannKiBaat.

Read more: https://bit.ly/3xWgQ9u

Ashish Kuvelkar • 3rd+
Senior Director at C-DAC
5d • Edited •

Today's Mann Ki Baat by Hon. PM Narendra Modi featured e-Sanjeevani, an integrated telemedicine solution developed by C-DAC. This is a proud moment for all C-DACians and we are thankful to the Hon. PM for his encouragement. This is yet another example of how technologies developed by C-DAC are silently touching citizen's lives.
The video can be watched here (watch 13m45s onwards):
https://lnkd.in/dN73cGZu
e-Sanjeevani portal can be accessed here: https://esanjeevani.in/

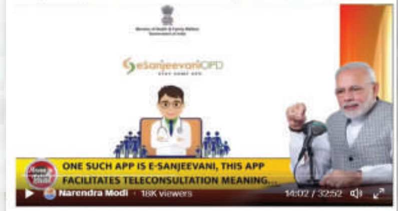

Narendra Modi @narendramodi
Sharing this month's #MannKiBaat. Do tune in!

C-DAC India
@cdacindia

@cdacindia eSanjeevani mentioned in today's episode of #MannkiBaat

Digital India @_DigitalIndia · Feb 26
The power of #DigitalIndia is visible in every corner. Different apps play a big role in taking the power of Digital India to every home. - PM @narendramodi at #MannKiBaat

4:17 PM · Feb 26, 2023 · **364** Views

Digital India
@_DigitalIndia

The power of #DigitalIndia is visible in every corner. Different apps play a big role in taking the power of Digital India to every home. – PM @narendramodi at #MannKiBaat

2:15 PM · Feb 26, 2023 · **3,432** Views

Suvendu Adhikari • শুভেন্দু অধিকারী @SuvenduWB · Feb 26
Tuned into Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji's #MannKiBaat at Nandigram. Hon'ble PM referred to Tribeni Kumbh Mahotsav of Hooghly, WB while elaborating about restoring our glorious heritage. He also wished the citizens in advance for Holi; the festival of colours.

Dr Mansukh Mandaviya @mansukhmandviya

ई-संजीवनी 'टेली-कंसल्टेशन' से लाभान्वित चंदौली, उत्तरप्रदेश के रहने वाले मदन मोहन लाल जी ने प्रधानमंत्री @NarendraModi जी से सांझा किया अपना अनुभव।

#MannKiBaat

Translate Tweet

12:02 PM · Feb 26, 2023 · 8,243 Views

Meenakashi Lekhi @M_Lekhi

भारत के UPI की ताकत भी आप जानते ही हैं। दुनिया के कितने ही देश, इसकी तरफ आकर्षित हैं।

कुछ दिन पहले ही भारत और सिंगापुर के बीच UPI-Pay Now लिंक लॉन्च किया गया: प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Translate Tweet

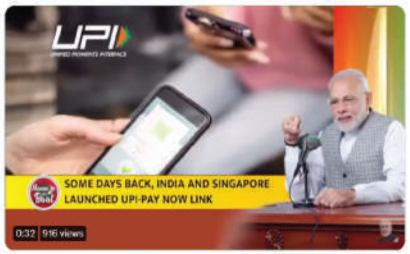

2:37 PM · Feb 26, 2023 · 3,089 Views

Dr Jitendra Singh @DrJitendraSingh

"साथियो, आपको याद होगा सरदार पटेल की जयन्ती यानी 'एकता दिवस' के अवसर पर 'मन की बात' में हमने तीन competitions की बात की थी।

ये प्रतियोगिताएं, देशभक्ति पर 'गीत','लोरी' और 'रंगोली' इससे जुड़ी थीं।"

- पीएम श्री @narendramodi.

#MannKiBaat #UnityInCreativity

Translate Tweet

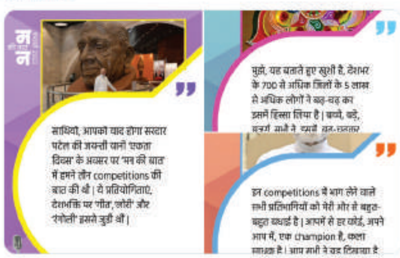

11:06 AM · Feb 26, 2023 · 2,310 Views

Dr. Ramesh Pokhriyal Nishank @DrRPNishank

'मन की बात' को आप सभी ने जनभागीदारी की अभिव्यक्ति का अद्भुत प्लेटफॉर्म बना दिया है।

- पीएम @narendramodi

#MannKiBaat

Translate Tweet

Piyush Goyal @PiyushGoyal

'मन की बात' में जब भारतीय खिलौनों की बात हुई तो देश के लोगों ने इसे भी हाथों हाथ बढ़ावा दे दिया: प्रधानमंत्री @NarendraModi जी

Translate Tweet

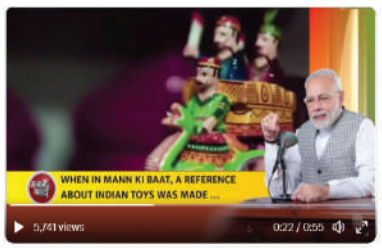

Sarbananda Sonowal @sarbanandsonwal

The words and songs of Assam are indeed touching and reflect the simple life of the common people.

Gratitude to Hon'ble PM Shri @narendramodi ji for highlighting this aspect in #MannKiBaat and congratulations to Shri Dinesh Gowala on coming 2nd in the Lori competition.

ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ | ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਰਿੰਦਰ ਮੋਦੀ ਨੇ ਡਿਜੀਟਲ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦਾ ਕੀਤਾ ਜ਼ਿਕਰ

ਸਮਾਜ ਦੀ ਸ਼ਕਤੀ ਨਾਲ ਵਧਦੀ ਹੈ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਤਾਕਤ

ਸਵੱਛਤਾ ਮੁਹਿੰਮ 'ਚ ਭਿਵਾਨੀ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਦੀ ਕੀਤੀ ਤਾਰੀਫ਼

98TH EDITION OF 'MANN KI BAAT'

e-Sanjeevani's reach reflects power of India's digital revolution: PM Modi

घर-घर तक पहुंच रही डिजिटल इंडिया की शक्ति : मोदी

मन की बात : कई देश यूपीआई की तरफ आकर्षित, ई-संजीवनी बना जीवन रक्षक

जन-अभिव्यक्ति का अद्भुत प्लेटफॉर्म

स्वच्छता के साथ आमदनी भी

पंजाब के कमल कुमार रंगोली प्रतियोगिता में रहे विजेता

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात में बताया कि लोरी लिखने में पहला पुरस्कार कर्नाटक के चामराजनगर जिले के बीएम मंजूनाथ ने जीता है। इन्हें पुरस्कार कन्नड़ में लिखी उनकी लोरी 'मलगु कन्दा' के लिए मिला है। इसे लिखने की प्रेरणा इन्हें अपनी मां और दादी के गाए लोरी-गीतों से मिली। असम में कामरूप जिले के रहने वाले दिनेश गोवाला ने द्वितीय पुरस्कार जीता।

उन्होंने जो लोरी लिखी है, उसमें स्थानीय मिट्टी और धातु के बर्तन बनाने वाले कारीगरों के लोकप्रिय शिल्प की छाप है। रंगोली में पहला स्थान पंजाब के कमल कुमार का रहा। उन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस और अमर शहीद वीर भगत सिंह की बहुत ही सुंदर रंगोली बनाई। देशभक्ति गीत प्रतियोगिता की विजेता टी. विजय दुर्गा आंध्र प्रदेश की हैं। उन्होंने तेलुगु में अपनी प्रविष्टि भेजी थी। ब्यूरो

लता मंगेशकर, बिस्मिल्लाह खान को किया याद

Modi hails role of tech in progress

Says digital revolution has helped better peoples' lives

DC CORRESPONDENT
NEW DELHI, FEB. 26

PM mentions Goan artist during 'Mann Ki Baat'

Gurudutt Vantekar is a rangoli artist and won the third place at the national level

Staff Reporter
Panaji

In the 98th episode of Mann Ki Baat on Sunday, Prime Minister Narendra Modi made a special mention of Gurudutt Vantekar, a portrait rangoli artist from Sankhali.

> I am absolutely thrilled and overjoyed to receive a special mention from the prime minister for winning this competition. As an artist, there is no greater honour than being recognised for your work by such an esteemed leader of our nation
>
> **Gurudutt Vantekar,** Rangoli artist

Gurudatt Vantekar, a speed painter and rangoli artist, represented Goa at the national level and took third place in the category of "Best Rangoli" in a contest run by the ministry of culture as part of Azadi ka Amrit Mahotsav.

In the show, prime minister Modi claimed that the Rangoli competition had become fairly popular, just like music and lullabies.

The prime minister claimed that each participant's rangoli was more exquisite than the next. In this instance, Kamal Kumar's submission from Punjab turned out to be the winning one. He created a stunning rangoli for Netaji Subhash Chandra Bose and Amar Shaheed Veer Bhagat Singh.

In his Rangoli, Sachin Narendra Avsari of Sangli, Maharashtra, captured the bravery of Shaheed Udham Singh, the massacre, and Jallianwala Bagh.

Gurudutt Vantekar, Goa resident created a rangoli in honour of Gandhiji, and Malathiselvam of Puducherry drew portraits of other outstanding independence warriors.

The discussion about Vantekar in the Mann Ki Baat programme has caused a wave of joy to sweep over Sankhali and the entire art community. At the age of five, Gurudatt Vantekar started creating rangolis.

He has been working in the field for more than 14 years, creating a variety of works of art such as murals, landscapes, portraits, and more. For more than seven years, he has been creating 3D rangoli, and recently his hyper realistic rangoli of a child gained widespread attention.

The 40-year-old artist is well known for his five minute speed painting and has performed for Raveena Tandon and Padma Shri-winning playback vocalist and ghazal performer Pankaj Udhas.

डिजिटल इंडिया की ताकत बढ़ी

दुनिया के कई देश यूपीआई की तरफ आकर्षित हो रहे

एजेंसी ▸▸ नई दिल्ली

पीएम मोदी ने कहा कि दुनिया के कई देश हमारे यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) की ओर आकर्षित हो रहे हैं। ई-संजीवनी एप की तारीफ करते हुए कहा कि मध्यम वर्ग और पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए ई-संजीवनी जीवन रक्षा करने वाला एप बन रहा है। तेजी से आगे बढ़ते भारत में डिजिटल इंडिया की ताकत कोने-कोने में दिख रही है। कुछ दिन पहले ही भारत और सिंगापुर के बीच यूपीआई-पेनाउ लिंक लॉन्च किया गया। अब सिंगापुर और भारत के लोग मोबाइल से पैसे का स्थानांतरण कर रहे हैं।

› महामारी में एप वरदान साबित हुआ

पीएम मोदी ने कहा कि डिजिटल इंडिया की शक्ति को घर-घर पहुंचाने में अलग-अलग एप की भूमिका होती है। कोविड-19 महामारी में ई-संजीवनी एप लोगों के लिए बहुत बड़ा वरदान साबित हुआ है। ये भारत की डिजिटल क्रांति की शक्ति है। अब वीडियो कॉन्फ्रेंस से आप डॉक्टर से अपनी बीमारी के बारे में सलाह ले सकते हैं।

'मन की बात' मधून होळीच्या शुभेच्छा

'व्होकल फॉर लोकल'चा प्रधानमंत्र्यांचे देशवासीयांना आवाहन

समाज की शक्ति से बढ़ती है देश की ताकत: मोदी

मन की बात में मोदी ने किया राज्य के दिनेश ग्वाला का जिक्र

सोनोवाल व हिमंत ने दी बधाई

गुवाहाटी, 26 फरवरी (ख. सं.)। राज्य के कामरूप जिले के रहने वाले दिनेश ग्वाला ने देशभक्ति पर लोरी प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार जीता है। इन्होंने जो लोरी लिखी है, उसमें स्थानीय मिट्टी और पीतल के बर्तन बनाने वाले कारीगरों के लोकप्रिय शिल्प की छाप है। उनकी इस सफलता की चर्चा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज अपने मन की बात में की है। केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग तथा आयुष मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर लिखा की असम के शब्द और गीत वास्तव में आम लोगों के सरल जीवन को छूते और प्रतिबिंबित करते हैं। मन की बात में इस पहलू को उजागर करने के लिए वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त करने के साथ दिनेश ग्वाला को लोरी प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर आने के लिए बधाई भी देते हैं। वहीं दूसरी ओर मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने भी अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर लिखा कि उनका दिल उस वक्त गर्व से भर गया, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मन की बात कार्यक्रम में दिनेश ग्वाला द्वारा गाये गये एक लोकप्रिय असमिया लोरी का उल्लेख किया। हमारी स्थानीय प्रतिभा को पहचानने के लिए वह उनका आभारी हैं। वे ग्वाला को भी बधाई देते हैं।

'मन की बात' कार्यक्रम जनभागीदारीनी अभिव्यक्तिनो अद्भुत मंच : PM

'वोकल फोर लोकल'ना संकल्प साथे होळीनी उजवणी करोः नरेन्द्र मोदी

PM praises visually impaired folk singer of Bageshwar in Mann Ki Baat

କେନ୍ଦ୍ରାପଡ଼ାର କମଳାଙ୍କୁ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପ୍ରଶଂସା

ମନ୍ କୀ ବାତ୍ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ

लोकमत

रांगोळी कलाकार गुरुदत्त वांतेकर यांचे पंतप्रधानांकडून कौतुक

लोकमत न्यूज नेटवर्क

पणजी : पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी रविवारी झालेल्या 'मन की बात' कार्यक्रमात गोव्याचे रांगोळी कलाकार गुरुदत्त वांतेकर यांनी स्पर्धेत काढलेल्या रांगोळीचे कौतुक केले.

'मन की बात' या कार्यक्रमाचा ९८वा भाग रविवारी झाला. यात पंतप्रधान मोदी यांनी देशवासीयांना संबोधित केले. सरदार वल्लभभाई पटेल यांच्या जयंतीनिमित्त एकता दिवस साजरा करण्यात आला होता. एकता दिनानिमित्त देशभक्तीपर गीते, लोरी तसेच रांगोळी स्पर्धेचे आयोजन केले होते. यात देशभरातील रांगोळी कलाकारांनी देशभक्तीचा संदेश देणारी रांगोळी काढली होती. या रांगोळी स्पर्धेत गोव्याचे रांगोळी कलाकार गुरुदत्त वांतेकर यांनी महात्मा गांधी यांच्यावर आधारित रांगोळी काढून स्पर्धेत तिसरे बक्षीस

प्राप्त केले. वांतेकर यांनी काढलेल्या या रांगोळीचे पंतप्रधान मोदी यांनी 'मन की बात' या कार्यक्रमात उल्लेख करून त्यांचे कौतुक केले आहे. खुद्द पंतप्रधानांनी वांतेकर यांचे कौतुक केल्याने त्यांच्यावर शुभेच्छांचा वर्षाव होत आहे. वांतेकर हे गोव्यातील प्रसिद्ध रांगोळी कलाकारांपैकी एक असून, त्यांनी आतापर्यंत विविध स्पर्धांमध्ये भाग घेतला आहे. दरम्यान, मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत यांनीही वांतेकर यांचे अभिनंदन केले आहे.

ಮೋದಿ ಮನದಲ್ಲಿ ನಮ್ಮೂರು, ನಮ್ ಕವಿ

ಮಂಜುನಾಥ್ ಜೋಗುಳ

ಡಿಜಿಟಲ್ ಕ್ರಾಂತಿಗೆ ಯುಪಿಐ ನಾಂ

'ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್'ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ ಬಣ್ಣ

उत्तराखंड के समृद्ध लोक संगीत को सराहा

'मन की बात' जनभागीदारी का अद्भुत मंच बना : मोदी

नई दिल्ली, 26 फरवरी (एजेंसी/जसपाल सिंह) : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि 'मन की बात' कार्यक्रम जनभागीदारी की अभिव्यक्ति का अद्भुत मंच बन गया है। उन्होंने कहा कि जब समाज की शक्ति बढ़ती है तो देश की शक्ति भी बढ़ती है। आकाशवाणी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 98वीं कड़ी में संवाद के इस माध्यम से उन्होंने पारंपरिक खेलों और भारतीय खेलों को बढ़ावा दिए जाने सहित अपने विभिन्न आह्वानों का उल्लेख किया और कहा कि लोगों ने इनमें बढ़चढ़ कर भागीदारी की। प्रधानमंत्री ने टेलीकंसल्टेशन का भी जिक्र किया और कहा कि भारत के लोगों ने तकनीक को कैसे अपने जीवन का हिस्सा बनाया है, ये इसका जीता-जागता उदाहरण है।

समाज की शक्ति से बढ़ती है देश की शक्ति

उन्होंने कहा कि हमने देखा है कि कोरोना के काल में ई-संजीवनी एप के जरिए टेलीकंसल्टेशन एक बड़ा वरदान साबित हुआ है। 'मन की बात' अब सैंकड़ा लगाने की ओर बढ़ रहा है। भारतीय खिलौनों की बात हुई, तो देश के लोगों ने इसे भी हाथों-हाथ बढ़ावा दे दिया। अब तो भारतीय खिलौनों की इतनी मांग हो गई है कि विदेशों में भी इनकी मांग बहुत बढ़ रही है। इसी क्रम में प्रधानमंत्री ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती 'एकता दिवस' पर गीत, लोरी और रंगोली से जुड़ी प्रतियोगिताओं और इनके विजेताओं का उल्लेख किया। इसी महीने होली के त्यौहार का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने लोगों से अनुरोध किया कि वे इसे 'वोकल फॉर लोकल' के संकल्प के साथ मनाएं।

वोकल फॉर लोकल के संकल्प के साथ मनाएं होली

'मन की बात' के 98वें एपिसोड में बोले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, घर-घर पहुंच रही डिजिटल इंडिया की शक्ति

स्वच्छ भारत अभियान के बदल गए मायने

'ಪೆರಿಣಿ' ರಾಜ್‌ಕುಮಾರ್ ಕೃಷಿ ಭೇಷ್

'ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್'ಲೋ ತೆಲಂಗಾಣ ನೃತ್ಯ ಕಳಾಕಾರುಡಿನಿ ಕೊನಿಯಾಡಿನ ಪ್ರಧಾನಿ...

PM: Triveni Kumbha Mahotsav revived in Bengal after 700 yrs

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: The Triveni Kumbha Mahotsav in West Bengal, which is referred to in Vaishnava, Shakta and Bengali literature, found mention in the 98th edition of PM Narendra Modi's Mann Ki Baat on Sunday.

In a major thrust on cultural revivalism, Modi said various historical documents suggest that though the Triveni Mahotsav was once regarded as a centre of Sanskrit, education, and Indian culture, the age-old festival that is celebrated on the banks of Ganga, could only be revived two years ago.

"It is special because this practice has been revived after 700 years. Although this tradition is thousands of years old, unfortunately, this festival was stopped. It should have been started after Independence, but it could not happen. Two years ago, the festival was started again by the locals," Modi said.

The PM said apart from attracting huge crowds to attend the Ganga Aarti, Rudrabhishek and Yajna that took place every day for three days, the Mahotsav also saw traditional Bengali Kirtan, Baul, Godiyo Nritto, Sree-Khol, Poter Gaan, and Chhauu-Nach become the focus of attention at the festival. "This is a very commendable effort to connect our youth to the country's golden past. There are many other such practices in India, which need to be revived," he said.

Modi said Indians promoted local toys so well that their demand has soared even in foreign countries. "When we spoke of the Indian genre of story-telling in 'Mann ki Baat', their fame also reached far and wide," he said.

प्रधानमंत्री के मन की बात से चर्चा में आए लोकगायक पूरन

Special mention for 3 Dulheri village youths on 'Mann Ki Baat'

TRIBUNE REPORTERS

CHANDIGARH/BHIWANI, FEB 26

In the 98th episode of his monthly radio programme "Mann Ki Baat" on Sunday, Prime Minister Narendra Modi was all praise for three youths of Dulheri village of Bhiwani district, who are running a cleanliness campaign.

Showering praises on the youths, the PM said the enthusiasm and dedication shown by these lads had certainly changed the meaning of "Swachh Bharat Abhiyan".

"These youths have decided to make Bhiwani a role model in terms of cleanliness. They formed an outfit called Yuva Swachhata Evam Jan Seva Samiti. At 4 am, they reach Bhiwani and run cleanliness drives at different places. To date, they have cleaned tonnes of garbage in the city," he said.

Pawan Saini, samiti head, said they were happy that their efforts had found mention in the PM's speech. The three youths had taken the initiative to make the village clean three years ago. Now, over 60 youths have joined them.

Will make Bhiwani role model in cleanliness: PM

Yuva Swachhata Evam Jan Seva Samiti members at Dulheri village.

प्रधानमन्त्रीको 'मन की बात'

समाजको योगदानले देशको शक्ति बढ्दैछ

ಕನ್ನಡಿಗನ ಲಾಲಿ ಹಾಡಿಗೆ ಮೋದಿ ಪ್ರಶಂಸೆ

ഇ-സഞ്ജീവനി ആപ് ഡിജിറ്റൽ വിപ്ലവത്തിന്റെ കരുത്ത്

पहाड़ी क्षेत्र के लोगों के लिए ई-संजीवनी बन रही जीवन रक्षा ऐप : प्रधानमंत्री

इ-संजीवनीचा दहा कोटी जणांना फायदा

'मन की बात'मध्ये पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांचे प्रतिपादन

Hindustan Times

In 'Mann Ki Baat' address, PM Modi says 'many countries drawn to India's UPI'

The Economic Times

Revival of age-old 'Tribeni Kumbho Mohotshav' in Bengal finds mention in PM Modi's Mann Ki Baat address

ZEE5

Replace plastic bags with cloth bags: PM Modi urges citizens in 'Mann Ki Baat'

आज तक

'स्वच्छ भारत' का संदेश, 'डिजिटल क्रांति' की तारीफ... देखें 'मन की बात' में पीएम मोदी का पूरा संबोधन

हिन्दुस्तान

पीएम मोदी ने 'मन की बात' में दिया उत्तराखंड का उदाहरण, जानिए क्यों खास है बागेश्वर का पूरन

दैनिक जागरण

Mann Ki Baat: 'मन की बात' में PM मोदी ने की दुल्हेड़ी गांव के युवाओं की तारीफ, स्वच्छता को लेकर दिया संदेश

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार